[illegible] ॥

जिसमें

[illegible] सुकवियों [illegible]
अनुनायक भेद उद्दीपन [illegible] के अनुसार
[illegible] से [illegible] है ॥

जिसको

[illegible] निवासि
श्री माधवप्रसाद त्रिपाठी ने रसिक पुरुषों के
अनुरागार्थ व अवलोकनार्थ निर्मित किया ॥

लखनऊ

मुंशी नवलकिशोर के छापेखाने में छपी
अक्टूबर सन् १८८८ ई०

[illegible] १५००

जाको वैद्यनमें नामसब कोबिद बखानोहै ॥ माधवप्र-
सादभये दूसरे पढतभाषा व्याकरण ज्योतिषअनेकमत
मानोहै । संग्रह कबित्त निजमति अनुसारकरि चूकै
क्षमैं कबिजन जाको यहबानोहै २ प्रथम गणेशजीके
पुनि अस्मरारिनके चारि फिरि लिखेमाघ पंचमीब-
सन्तके । चारि लिखे फागुन के चारिही बसन्तऋतु
चारि ऋतुग्रीषम के बरषा हुतन्तके ॥ माधव कहत
चारि शरद बखानकीन्हे चारिही हिमन्त चारिशि-
शिरहुगन्तके । यहिविधि षटऋतु करिकै यकग्रन्थमें
पढ़ैं सबकवि उर आनँद लसन्त के ३ सम्बत बखानौं
शून्य वेद ग्रह लग्न अरु भाद्रोंकृष्णपक्ष अष्टमीको शुभ
जानिकै । संग्रह आरम्भकरो तादिन पढ़नकाज कबित्त
अमित सतकबिनके आनिकै ॥ माधव बिलास नाम
करिकै प्रकाश यामें नवरस नायकादि सबहू बखा-
निकै । आनँद बढ़ावनहै मोद उपजावनहै कबिमनभा-
वनहै सुन्दर प्रमानिकै ४ ॥ दोहा ॥ जिमिबरणोसबक-
बिनमिलि सकल नायका भेद । सोईरीति संग्रहकरत
छांड़ि सकलचितखेद ॥ कवित्त गणेश ॥ बालकमृणालनि
ज्यों तोड़िडारै सबकाल कठिन कराल वै अकालदीह
दुःखको । बिपति हरतहठि पद्मके पातसम पंकज्यों
पताल पेलि पठवै कलुषको ॥ दूरिकै कलंकअंकभव
शीशशशिसम राखतहै केशोदास दासकेवपुषको । सां-
करेको सांकरन सनमुख होतहीतें दशमुखमुखजोवैगज
मुखमुखको १ एकई रदन गजबदन बिराजमान मदन

कदन सुत कदन सोकामाको । कहै गिरिधारी गिरि-
राजनन्दिनीकोनन्द आनँदकोकंदजगबंदचरणामाको ॥
सुण्डादण्डकुण्डली कमण्डलीकोमोहै मन भालचन्द्र
मण्डली बिशाल गुणग्रामाको । ऐसे गणनायक के बु-
द्धिबरदायकके पांयबन्दि कहत चरित्र स्यामस्यामा
के २ सत्वसत्ययुगकोकि सत्यहीकि सत्यशुभ सिद्धि
की प्रसिद्धि कैधौं बुद्धिऋद्धि जानिये । ज्ञानहीकीगरि
माकी महिमा बिबेक की कि दरशनहीको दरशन
उर आनिये ॥ पुण्यको प्रकाश वेदविद्या को बिलास
कैधौं यशकोप्रकाश केशौदास उरआनिये । मदनक-
दनसुत बदन रदनकैसो बिघन बिनाशनकोबिधिपहिं-
चानिये ३ बारन बदनसोहै एकही रदनजाके सुखमा
सदन सोमहाय कर सत्यके । दारिद दहन सुरतरु को
गहनऐसो मूषक बहन बिदहन खलमतिके ॥ सबसुख
सागर गुणागार उजागर है बुधिबर नागर देवैया
शुभगतिके । बिमलकरन ज्ञान ध्यानधरि शिवनाथ
संकट हरण ये चरण गणपतिके ४ ॥ कवित्तभगवती ॥ बा-
नी जगरानीकी उदारता बखानीजाय ऐसीमति उदित
उदार कौनकी भई । देवता प्रसिद्ध सिद्ध ऋषिराज
तपवृद्ध कहिकहि हारे सब कहिना कहूं लई ॥ भावी
भूत बर्त्तमान जगत बखानत है केशोदास कहैना बखा
निकाहूपैगई । भनैपति चारिमुख पूतभनैपांचमुख ना-
तीभनै षट्मुख तदपि नईनई १ मलयज धारादौं ध-
सन सुधाराकौं गुहिउरडाराकौं लसैमुक्तानकी । पां-

बड़ेपधाराकैंपंवारचौग्हाराकैंकुहैंजिस्तारीकौंबिध देवतानकी ॥ सुवर्णको सिंहासनकैं कुन्दको बिछानकैं मनसा कृपा.रानकैं सारा अँखियानकी । मानिकप्रदी- दीपन सों थारा साजि तारानकी आरती उतारनकैं द्वारा देवतानकी २ जहां जनु आसनन्त्रयासन स्वर्णा- सन गणेश श्रेष्ठ आसन सिंहासन तरेहैं । नायक रू- प्यहै अनन्त ब्रह्म छुपिताहिको अंद दुनै छिन [illegible] मोहिये करे रहैं । श्रीपति सुजानकोहि [illegible] केखाकरके [illegible] बिछायर रहेहैं । [illegible] [illegible] दोहीको [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] भक्तनिहिं । सोईहै [illegible] [illegible] को तोहीं [illegible] जीजको [illegible] [illegible] [illegible] सोहीं [illegible] [illegible] [illegible] आइ [illegible] । [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ३ ॥ कवित्तबसंतपंचमी ॥ आजु प्रभु माधवको बसंतपंचमीहै प्रभु [illegible] कोरहायोहै । आजुहीते होलईफतानको आयोहै आजुहीते नारिनके [illegible] [illegible] ॥ माधव [illegible] [illegible] [illegible] आजुहीते [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] है । सुवर्ण संयोगिन को [illegible] [illegible] को [illegible] आनन्द [illegible] है ९ आजु ब्रज नारी सब कारके तयारी [illegible] सारी जरतारी को सवांरी है । [illegible] आइ [illegible] बैठी

मारीछवि न्यारी भांग गोलिन की धारी है ॥ माधव
कहैरीसुजीव बंसिथारी झार गाहे पिचकारी लैगुलाल
रंग लारीहै। जाति मुभकारी माधचंद्रकी विचार किये
उतसाहभारी नंदलालपैसिधारी है २ कठ्ठामबसंतीताको
तकियाबसंतीसरपर दावसंती छविछाजत बसंती है।
चौराहैबसंती अंगजामाहै बसंती कटिफेंटाहै बसंतीपद
त्रानहूंबसंतीहै॥ बाजराधबसंती आंगनहु बसंतीवनका-
न्हु बसंती पाधोविहुत बसंतीहै। रागहू बसंती गाल
बजनबसंती नंदलाल भे बसंती जाति पंचमी बसंतीहै ३
आजुहीते माधुऋतुराज की अगोनो भई आजुहीते
ओसखोभई नारी विनकंतकी। आजुहीते आनंदस्याये
देसदेसनमें आजुहीते बाबैनर रागिनीहुसंतकी॥ आ
जुहीते औरैरंग औरैराग औरैबाग विहंग समाज औ
रै औरै भौंर पंतकी। होरी नव गोरी के मिलापकी
बधाई लाय आई अद्भुतआज पंचमी बसंतकी ४॥
फागवर्णन ॥ खेलिबेकोंफागु देखदारासी उतरिआई दीरघ
दृगन देखि लाखनैन पलकैं। बुलत दुकूल भुजमूलादर
मालवर उन्नत उरोजहार हीरनके हलकैं॥ देखोकविभ
गर धरतपद मंदमंद आननके ऊपरअनूप छवि छलकैं।
लालीलाल रंगभरी यौवनतरंगभरी आलिभरी आनँदगुला
लभरीअलकैं १ खेलैंसंग माधव नंदलाल औगुलालदोऊ
दृगनगयेरी उरआनँद बढ़ैनहीं। धोयधोयहारी पदमा-
कर तिहारी सौंह अवतो उपाय कहुचित्तमेंचढ़ैनहीं॥
कहांजाउं कैसीकरूं कौनसुनैकासों कहौं यतन बतावो

जाते दरद बढ़ैनहीं । सरीमेरी बीरजैसेतैसे इन आंखिन सों कढ़िगो अबीरपै अहीरको कढ़ैनहीं २ केसरि सुरंगहूके रंगमें रँगौंगीआज औरगुरुलोगनकी लाज परिहेलिबो । गाइबो बजाइबोजू नाचिबो नचाइबो जू रस बशहवैके हमसबी खेल खेलिबो ॥ ठाकुर कहत और होनीतौ लहैंगीबीर एक अनहोनी कहौ कौनी बिधि झेलिबो । कर कुच पेलिबो गरे में भुज मेलिबो जो ऐसी होरी खेलिबो तौ हमतौ न खेलिबो ३ आईफागु खेलिकैसुकेलिसुखसासुहे सों सुंदर सुघरोसों सनेहसर सावैहै । केसरिके रंगभीनी चूनरी सुरंगरंग अंगनअनंग की तरंग दरशावै है । राजत अनोखो आधो बदन गुलालमढ़ो कहतकिशोरसों अनूपकबिछावैहै । अमल अभंग आछो युतउतसाह मानो अरुणघटाते शशिनिकसतआवैहै४ ॥ षटऋतुबर्णानबसंतऋतु ॥ मधुमतवारेभारेमधु मधुगुंजरत देखि गुणीजन गीत गावत उमाहके । कोकिलनकीबबोलैं करतकलोलैंआगे पौनहरकालेआलें छूटे चितचाहके ॥ मोहनसोकबिकहै शिशिर तगीरी कीन्हो वशकरिलीन्होदेशरहेना उमाह के । यहजिय जानुमानु करु ना गुमानुआलीडेरा परे बागन बसंतबादशाहके १ भौंरनके पुंजआगे गुंजरत कुंजरसे कोकिलनकीबसों कुहुकिउठिधायोहै।किंशुक निशानसे लसत आसमानछवैछवैबोरबरछोनसों अधिकरूपछायोहै ॥ मोहनसोंकविकास कारीगर कोपकरि त्रिविधसमीर सोई सुरंगचलायोहै॥ माननी गनीमनकेमानगढ़ तोड़िबे

कोसकलसमाजसोंबसंतराज आयोहै ३।।।।रनगीरी करिआनँद अमीरी पाय कीन्हो पतिझारदफतर सब रहीहै। बिरहपुरामें निज अमल लिखायलीन्हो हरे हरेचातुरीसों चौहदचौहद्दीहै॥कोकिलनकोवनबोथ ह्दनकी बही बदि गैंदनको गिलमें गुलाबनकीगद्दीहै। भेंटलै मिलौरी आलीटूटिगो गुमानगढ़ काम बादशाह के बसंतसुतसहीहै ३ डारद्रुमवागन बिछौना बनापल्लव को सुमन झँगूला सोहैछबि तनभारीदै। पवनझुलावै केकीकीरबतलावै देवकोकिल हँसावैहुलसावैकरतारी है। उड़तपराग सो उतारोकरै राईनोन कंजकलीनाय-कालतान शिरतारीदै ॥ मदनमहीपजूको बालकबसंत ताहि प्रातही खेलावत गुलाबचटकारीदै ४ ॥ ग्रीष्मऋतु वर्णन ॥ जेठकी जलनि जलै मृगजल हलै तैसे पौनचलै ज्वालिम ज्वालाकनके जारेसे। कहैगिरिधारी जीवजंतु तेअनंत तेवै जहांतहां छपेसबै तपे भौनभारेसे॥ अन्दरन नृपतिबिपति परीबंदरन रहेदति दंदरन सरपसंहारेसे। मंदरन सिंदुर मदांधधूपधंधरनकंदरन कोलभील कलहैं कल्हारेसे १ तपतप्रचंड मारतंड महिमंडल में ग्रीषमको तीखनि तपनिवारापारहैं। कहै गिरिधारी कीचकांचसीदहनलागीभयेनदीनदनीरअदहनधारहैं॥ झपटैं चहूंघासी लपटैं लपेटैं लूक फनीकीसी फूक पौन फूकनको झारहैं॥ अवांसी अटारीतपी तवासी अवनि महा दावासे महल औ पजावासे पहारहैं२ तेज सरसानेभानुभूगिरिधिकानेभूरिधूरिकेउड़ानेदिगधुंधुरि

दिखाने हैं। पौनके झझाने झूक आगि जनुसाने बनझाड़ झरसाने सर सकलसुखानेहैं॥ कोलकहलाने सबजीव अकुलाने अति आतप अघाने भाजि छांहन छपाने हैं। अंदर दुराने तहखाने खसखाने लोग सून कबिताने ईमिग्रीषमबखानेहैं३ सूखेसर सरितासनाका सिंधुबेलालग तीर्थनिधिकानो धराभूधरबखाने और। शाखनमें शाखामृग शकुन ससेटेसमदंती मतवारे जारे आनि लझकोराझोर॥ कहैंअवधेश कैसे बीतत बियोगिनकी दावानल दौरधौं बिलोक्यो सीभई छकोर। कहलमचीहै कोल कच्छपककोदरलौंउठग्यारस्मजूकी उष्मारसमैंबढ़ीहैंजोर ४॥ वर्षाऋतुबर्णन॥ मूंदिडारु झांझरे झरोखेद्वार नावदानपवन न आवैमेरो दरदबटावोरी। जेते आसपास बागवने हैं सुगंधनके तेते अबजाय जरा मूरतें कटावोरी॥ बेनीकबिकहै जोकलापिनसों राखा चहो पापी पपिहाको यहि देशते हटावोरी। पिया गुणानगावो नसुनावो शोर मोरन की घटा ना दिखावो बेगिआंगन पटावोरी १ कैधौं विषधर खाई सीच आई मोरनको भूतल प्रकटपरी कीचहू नईनई। कैधौं दौरि दादुर गयेदबि दरारनमें पापीपपिहाकी चोंच पावक दहीदई॥ घासीराम बाक बक बाजनीको त्रास मानि कैधौं वहिदेश बीर पावस ठईनई। कैधौं काम श्यामजू के अंगते निकारिगयो जूझिगयो मेघकैधौं बीजुरी सतीभई २ कैधौं वहि देश में हमेश बरसत मेह कैधौं निजदेश बेश बादर निसरिगो। कैधौं बक

दादुरन दामिनी दिखाईदेत कैधों पिक चातक मयूर गरपरिगो ॥ कैधौं हैनकागद कलमकी रवैयेउहांकैधौं शिवगुलामजू धवैये कहूंधरिगो । कैधौं उन गावन में सावनसुहावनना कैधौं मनभावनको आवन बिसरिगो३ लगी सो लगाय लंक लोयन खराबकरो मारिकरो मोरन अहार मारजारेको । सुकबि निहाल इनआंसु-रिन मूंदिमूंदि सुनिहौं न शोरघोर झिल्लीझनकारेको। भेखनकी भीर सहसानन समेटिडारो मेटिडारो गरब गरूर घनकारेको । जालसों जकरि कहूं पावों जोपक रिपंख फोहाफोहा करों या पपीहा दईमारेको४ ॥

शरदऋतुबर्णन ॥ ॥ फूले आस पास कास बिमल अकासभ-यो रही न निशानी कहूं महिमें गरदकी । गुंजत कमल दल ऊपर मधुप मैन छापसी दिखाई आनि बिरहाफ रदकी ॥ श्रीपति रसिकलाल आली बनमाली बिन क छूना उपाय मेरोजयके दरदकी । हरद समान तनजरद भयोरी मोहिं गरद करत चारु चांदनी शरदकी १ ॥ शरद प्रकास भई पावसको आसगई कातिक के मास जूह बारिद बिलात है । आस पास कास गुलाबास वृन्द फूले देखि सेज पै करेज शूलहोत रैनिजात है ॥ ऐसही बिथामें कंत आयके पुकाखो द्वार सुनिके अवाजभयो हर्षयुत गातहै । सुधि बुधि छांड़ीदौरि खोलतकिवांड़ी ब्रज सांवरे बिहारी मिलि प्यारी मुसकात है २ अमल अकाश उदै कुम्भज सितारे तारेतारेपति तैसी प्रभा सक ल सिहातेहैं ॥ सलिलसुखाने बीथी बिमल पयानेसोह

उदितउछाह तुरगच्छ तरुनाते हैं। कहैअवधेश शोभा
विशदविलोकि भूमिखंजनदेखाने यातेशरद सुहातेहैं
कहूं कहूंविहत बलाहक बिलानलागे पहुमपरागलैलै
अनिलउडातेहैं ३ कासभयो कानन में कछुकविकास
योग स्वाती आस चातक विषादकछू नास भयो। नास
भयोमृग दुखजन हरदासकहैं आनंद चकोरनको चौरन
वासभयो ॥ वासभयो शरदशरद की अवाई जानि नी-
लवास खंजनको नगर निवास भयो। वासभयो सुखद
सुवासको जलज मध्य कुंभजको प्रकट अकासमें प्रका
स भयो ॥ ४ हिमऋतु वर्णन ॥ आछी अति कोठरी सवांरी
सेजसोधे सन आस पास भीतर कपूर बगारे रहैं। द्वार
परे परदे गलीचन सों ढांपीभूमि जरैदीप दीपन सोआ-
नंद भरे रहैं॥ ताही समय कंत संग युवती हेमंत ऋतु
पौढ़े पलका पै दोऊ आनँद भरे रहैं। शीत दुखद पटे
सनेह सुखचपरे सो लपटे दुशालन में छपटे परेरहैं १
रावटी रँगीली पैरँगीलै दीपदान दीपै दावैदीह परदेस-
स्वरी छिति छाईहै। कहै अवधेश तैसो फरस गलीच-
नको आले आले सकल दुशालन सजाई है ॥ उघरउर
जंडनकी प्रमदा प्रमादै काम मीरोअंग राग जासों उठै
उफाई है। ठांव ठांव हौजभरे हलकैं हमामन के हरष
हमेशा होत हिमऋतु आई है २ काले तनवाले भीन
वालेमधिलालेकंठ कालेकर कौलसे विशालेछबि वा-
लेरी। आले बनमाले जनपाले बलशाले खलघाले रस
शाले सो कशाले निपटा लेरी ॥ पाले हिमवाले सों ब-

चाले मनवाले बात साले औ दुसाले उरसाले सों उटा-
लेरी। आंगी खसकाले मखिसाले को उढाले ब्रजबाले
नंदलालको हियाले लपटालेरी ३ अगरकी धूपमृग
मदको सुगन्धवर बसन बिसाल जाल अंग ढांकियतु
है। कहै पदमाकर सुपौनको न गौन जहां ऐसे भौन
उमँगि उमंग छाकियतु है॥ भोग औ सँयोग हित सु-
ऋतु हे मंतहीमें येते और सुखद सुहायेबांकियतु है।
तानकी तरंग तरुणापन तराणीतेज तेल तूलतर्कातात
सालताकि यतुहै ४ शिशिरऋतु वर्णन॥ बारियां महलकी
महलकी मुंदीहै जहां रासैपरमलकी अँगीठियांअनल
की। जोतैमोम भलकी छिबीरैहै मखमलकी जोब्यालि
यां अमलकी पलँगी मखमलकी॥ ग्वालकवि थलकी
लचीली लंकबलकी वो फूल समहलकी प्रभामें भला
भलकी। बिपरीत ललकी कहैको बात कलकी सो
चालै छबि छलकी दुसालेमें उछलकी १ आड़नारहत
छमठाढ़ेहो रहत सदा पश्चिमकी पाय पौन पालासों
फटतुहै। कांपत करेज सेज सोइबो सुखद काहा गरम
गवांरकी गहरता घटतुहै॥ बेनीकबिकहै पायपानीके
परसहोत पीरसी उठतनेम नाहीं निपटतु है। ओढ़िये
दुसाला तरे तोसक बिसाल लिलालागे अंगबाला
सीतकाला ना कटतुहै २ ववदर आंवै और बरवर हांथै
तऊ थरथकांपै अंगबजत बतीसोजाय। फेरि मखतूलन
के चोहरेगलीचनपै सेजमखमली सोहै सोऊ शरदीली
जाय। ग्वालकबिकहै मृगमदके धुकायेधूम बरतअंगी-

टोतामें आगिगहछपीसीजाय॥ छाके हरासीसी आनि सीसीसी मिटैगी जौलौं कुच उकसीसी छाती छाती सोन मींसीजाय ३ नारीबिन होतनर नारी बिन होत नर रातिसियराति उरलाये पयोधरमें। बेनीकवि प्रीत लसमीरकी सलाका सुनि सांझहीते सोवत कपाट दै सदनमें॥ पत्तीपर जोरेरहै फूलफल थोरेरहै पालाको प्रकासआस पास धरातलमें। बसन लपेटेरहै तऊजानु पेटेरहैंग्रीगौर समेटेरहै लेटेरहै घरमें ४ अथ षट्‌अंगवर्णन॥

प्रथमपदवर्णन॥ गंगाजीके जलमध्य कंठकेप्रमाणपैठि जपि जपि सूर मंत्र आनंद बढ़ावही। केशौदास धामजल प्रीतसहैएककरस टाढ़ेएकपांय कोटिकलपै नशावही॥ कोमलअमलभये सुंदर सुबास भये कमल निवास मन यदपि अमावही। पायो वरु ब्रह्मपद पदमिनी पदमिनी तेरेपद पदवीकोपद पैन पावही १ मंदहू चपतइंदु बधुके बरण होतप्यारी के चरण नवनीत हूते नरमैं। सहज ललाई बरणी न जाय काशीराम चुईसी परत छबियाते अति भरमैं॥ येरी ठकुराइनि की नाइन गहत जब ईंगुरसों रंगदौरि जात दरबरमैं। दियो है कि दीबहै बिचारि शोचै बारबार बावरीसी होरही महावरी लै करमैं २ बिम्ब में प्रबाल में न ईंगुर गुलालमें न जपा पुहुपमाल में नीकन चित निहारे मैं। दाड़िम प्रसूनमें नसून धरासूनमें नइंद्रकी बधूनमें न गुंज अँधियारे मैं॥ हैकुहकभारंगमेंन किंशुक पतंगमेंन जावकमजीठ कंज पुंजवारि डारे मैं। राधिका तिहारे पग

अरुणा समताको हेरिहारे कबितान पावत विचारे मैं३ जगमगे जावक जगीले जरबीले कैधौं ऊपरतेभूपर प्रभाकर प्रभालची ।गरदविहीन कैधौं शारदसरोजपुंज कैधौं छबि छायेसे बनाये बिधिलालची ॥ भौनकबि कहैरंगरतिके हरोलकैधौं निकसे निवेरिगति गतिके बिशालची । तरुणातिहारे पग जगमग होतकैधौं जग के जलूसमैनभगके मसालची १ ॥ अथकटिबर्णन ॥ कोऊ कहैकैधौंतत्त्व चारिके चुकैपैले अकाशहीसों कीन्हों चतुरानन चकारिहै। कोऊकहै कौनो छलछन्दहै कहत कोऊ बिधनै बनावत बिसारेउ हरबारिहै ॥ तेरोईसो तनतोही जानैना जनेउकोसो भेऊपायो महीहै गोबिंदमन धरिहै । नाभिमन करणी तरंगिणी त्रिबलिकुच शम्भुलग पायेकैं मुकति पाई कारिहै १ उन्नत उरोजन को भारबेशुमार कौन करत बिचारपार बिगतअसार मैं । नजरि न आयोध्यान धीरज लगावैं गहे अंकहू न पावै कहूं कामकेबिहारमैं ॥ भौनकबि कहै तिथिबार औलगन जैसे प्रकटन होत बिन ज्योतिष बिहारमैं । ब्रह्मके स्वरूपते महीन कटितेरी येरीहांकरै किना करै सोना परै बिचारमैं २ भतकी मिठाई जैसी सांचे को झुठाई जैसी स्यारकी ढिठाई जैसी छीन छहरतु है।धीरकैशाह ंसकेमोदामदाव कैसोसुख शूरकैसी शंक अंक रंक कैसो बितुहै॥ सूमकैसो दानमति मूढ कैसो ज्ञान गोरीगौर कैसो मान मेरेजान समुदितु है । कौने है सवाँरी वृषभानकी कुमारीप्यारी तेरोकटि निपट

कपटकैसो हितुहै ३ येरीवृषभानकी कुमारी तवकटि लखि ध्यानमेंनआवै अति सूक्षम बिशालहै। कैधौं हर बरमें बनावतबिसरो बिधिकैधौं जोरिदीन्हो अनुतार लै कि वालहै॥ माधव कहत करपरसते जान्योजात ऐनकलगायेलखिपरै कछुहालहै। सत्यहैकि झूंठहैकि नाहींहैकिहैधौं कछुजादूहै किसंशहैकि तंत्र इन्द्रजाल है ४ अथकुचवर्णन॥ कैसेरति रानीके सँवारेकहै श्रीपति जू जैसे कलधौतके सरूरह सवाँरेहैं। कैसे कलधौतके सरोरूह सवाँरेकहै जैसेरूप नटके बटासे छबिधारेहैं॥ कैसेरूप नटके बटासे छबिधारेकहे जैसेकाम भूपतिके उलटेनगारेहैं। कैसेकाम भूपतिके उलटे नगारेकहेजैसे प्राणप्यारी कुच उन्नत तिहारेहैं १ कनक अनारदो तयारकरि कारीगरभरिकै शृँगार रसबंदनहींकीनो है। पायकै सुबास कैधौंलखि गुरुदास मनो कंजकी कलिन पै मधुपबास लीनो है॥ कैधौं शम्भु अस्थिर ह्वै बैठेहैं सर्वाग्निह्वैके शीशन पै जटाजूट सोहत नवीनोहै। प्यारी के कुचनपर कास खेलवारीमनो टोना डीठ लगिबे को स्याही धरि दीनोहै २ कूजे कंद किन्दुक से बालेगज कुम्भ कुम्भ सम्पुट सराहिकोते वारि वारि डारेहैं। चंद्रमुखी उरके उरोजनको आ पनलखि चक्रवाक श्रीफल सकुचि हियहारे हैं॥ कहै शिव- गुलाम चोखे नोखे नये नीरज से औंधि ये नगारे नये नारंगी निहारे हैं। सुभग सलोने अनुहारि हर होने लोने सोनेके अनारसे निहारि निरधारे हैं ३॥ कोक

कोक नदसे नगारे निहारियतु भारे भानमती केबटासे बरदरसे। कन्दकैसे कूजे तरबूजे नारँगीसे चारु सम्पुट सेवालेसे अनारश्रीफलसे॥ कहै गिरिधारी प्राणप्यारीके उरोजदोऊरूप कैसोराशि महामोहनीके घरसे। गागरिसे गेंदसे गुमज गजकुम्भजसे गुम्बजसेगुच्छसे गिरीशगिरिवरसे॥ अथमुखवर्णनम् ॥ कोमलता कंजसे गुलाबते सुगन्धलैकै चन्द्रते प्रकाश सोतो उदितउजेरोहै। रसलै रसाननसों नीर निरबाननसों चातुरीसुजाननसों कौतुक निबेरोहै॥ ठाकुर सोकविया मसालो बिधि कारीगर रचना रचनहारो और सब चेरोहै। कुन्दन को रंगलै सवादलै सुधाको बसुधाको सुखलूटिकै बनायो मुखतेरोहै १॥ एककहै अमल कमल मुखसीताजूको एककहै चन्दमुख आनँदको कन्दरी। होयजो कमलतौतो रैनिहीमें सकुचैरी चन्द जोतो बासरमें द्युति होय मन्दरी॥ बासरहू कमल रजनीहीमें मुखचन्द बासरहू रजनी बिराजै जगबन्दरी। देखो मुखभावना न देखाई कमलचन्द ताते मुखमुखै सखि कमलैन चन्दरी २ मृगनकी मीननकी चंचलाई नखनमें हीरनकी मोतिनकी ज्योतिहै रदनमें। आई है सिर्मिरिकै सिठाई सब ओरनमें ऊंखमें न दाखमें न स्वाद सरदूनमें॥ महाकबि बालमके खुलेहैं बिशालभाल रातिउ दिन राजत मशालसी सदन में। बिधनै गुलाबकैसो अरकउतारि मानों चन्द्रको निकाइ राखि प्यारीके बदन में ३॥ भृकुटीतनीको नकबेसरि बनीकोलट नागिनि फनीको

लखि कंजफूल फीकोहै। मैनकी मनीकोनैन बान की अनीकोबैन चोखेरस नीकोहीस हुलसनहीकोहै॥ रूप रमनीको कहा रमारमनीको गजगति गमनीको सिंह जोवन सोजीको है। बेदीबन्दनीको मन्दहासफन्दनी-कोमुख चन्दहूतेनीको वृषभान नन्दनीको है ४॥
अथ नेत्रबर्णनम्॥ सेसमैनतीके हैं न और जगतीके पैनरक्तहूं गनीकेहैं न देखे हरनीके हैं। नाहीं नैनगीके बरलसै पन्नगीकेमन मैनकाज नीकेनैन बानहू अनीके हैं॥ उपमा नफीके बर सुखमा घनीके हमदेखे हैं नवीके मन मोहन भनीके हैं। मीन हैं न ठीके खंजरीटहू कहीके भोर पंकजहूते नीके नैन गोप नन्दनीके हैं १ सान धरी सुन्दर क्रपानसी कही न जात बानहूते बेधक बिशेष दरशावती। कैदकै कटाक्षनसों किम्मति करन की हिम्मति हजारनकी हरय हरावती॥ भौनकबि कहैचारु चिकनी चवाइन में चंचल चलाक चोटऔ-चक बचावती। ऐसी अनियारी अँखियान में अंजन आंजि आंगुरी अजब वै अटाक बचि आवती २ भृकुटी चढ़ीके योधा मैनकी गढ़ीकेसौति दीपक दढ़ीके रंग करत रदीसे हैं। भगित कबिन्द चन्द्रमाकी ओर चाहकरि उपमा चकोर मति पावत कदीसे हैं॥ कोकनद मुद्रित मलीने मृगसीनेमीन खंजननवीने हेरिहारे तेहदीसेहैं। इशाके अशीसेपै कमानके कशीसे मैनमदके मदीसे नैन तेरेसेनदीसे हैं ३॥ एकई झपाके सें छपाके मनमोहैदृग ऐसे मारुमाके ना रमाके ना उमा के हैं।

हैं । दशहूदिशा के मनशाके फल देनहारे कारन निशा के ईश ताके अब काके हैं ॥ भापके जहांकेतहां मीन जल ढांकेगये हरिन हरीनहांके कवल कहांके हैं । मद नसमाके मुखमाके उपमाके चारु चंचल चलांके नैन बांके राधिकाके हैं ४ ॥ अथ केशवर्णनम् ॥ श्रीपति सेवार कैसे सोहत शृङ्गार जैसे सोहत शृङ्गार कैसे जैसे तम भारहैं । तमनकी भारकैसे मरकतसार जैसेमरकतसार कैसेजैसेघनभारहैं ॥ घननके भारकैसे मोरपखवार जैसे मोरपखवार कैसे जैसे अलिहार हैं । अलिनके हारकैसे पन्नग कुमार जैसे पन्नग कुमारकैसे जैसे तेरेबार हैं १ तमतम तामसरसादिमद तोयदसी नीलक जटासपाट जटि प्रजटीसी है । पञ्जन प्रकन्दरप दीपक शिखासी चारु हाटक फटिक ओप चटकि फटीसीहै ॥ कचकुच दुबिच विचित्रकृतबक्रवेश छूटी लटपाटी घटतट उप टीसी है । विरह असुभपक्ष तीतन प्रदोषपाय पन्नगी पिनाकी पदपूजि पलटीसी है २ सुन्दर सजीले पर लच्छसहजीले रावेपरमलजीले शुभ कज्जन कजीले हैं । बेलिनबसीले अलिऔलिन हँसीले छपयश में यशीले आदि रस मेरसीले हैं ॥ नेहपरशीले परनेह सरसीले अननैन चमकीले चहकीले चटकीले हैं । तेरेकच नीले छूटि छबिसों छबीले मानो पन्नग नगीले मैं मन्त्रबल कीले हैं ३ पीठितन ताकतही डीठि डसिलेत आली फैलिकै विरहविष रोमरोम धावतो । समाक में ऐसे हाल होतेना कितेकनके कोऊ येते गाडुरी कहांते हूं

ढिलावतो ॥ ईश्वर दोहाई कहूं होती वाकी व्यालि नी तो काली के नथैया कान्ह काहे को कहावतो। भुरि मुसक्यानि सब जानती न राधे जोतो केलीकेउसन ब्रजबसन न पावतो ४ ॥ अथ शृंगाररसवर्णनम् ॥ चरण क मल तन सरस कुसुमरंग चम्पा के बरण तन गंधजुही जेनहै। नारंगीसी मंडी औ उरोज बने श्रीफलसे बिम्ब से अधर दंत दाड़िम बिजैनहै ॥ अलि कैसा केशरंग कीरकैसी नासिका है कंठतो कपोत कैसा कोकिला के बैनहै। गति गजराज कैसी कटि मृगराजकैसी हा यकैसा घूंघुट हरिन कैसे नैन है १ चम्पक कली सी खिली अली अवलीमें वृषभानकी गली में चलीजात पंथ पेखीमें ॥ कामअबलासी कलाधरकी कलासी ल वलासीलिये कनक लतासी अवरेखी में। शिवलाल ताखिन ते आंखिन ते वाकी चालु टरत न टारे चारु हंसकी बिशेखीमें। छवि तनुजासी छवि दीपके उ जासी पंचबान के धुजासी सिंधुजासी जात देखीमें २ बानी कहिये तो वह बीनाको लियेई रहे गौरी तौ गिरीश अरधांग में लगाई है। कमलान कान्हकेहि येते उतरत अरु रम्भामें तो येती नहीं रूप अधिकाई है ॥ रति कहियेतो अति प्रौढा अबहीं है अरु यामें तो अजौलग कछुक लरिकाई है। फेरि फेरि बेरल गि हेरि हेरि हारो नृप जानि ना परति यह कोहै कहां आई है ३ केशरि को गारुलै शिंगारुनाशिंगारु ना बिगारु देह दीपति मनोहर मसालकी। ऐसे कम

नीको लगै अमल अमोल तन खुलीशोभा सहज अनूप रूप जालकी ॥ कहै गिरिधारी श्याम सारिहो सँवारे एक बार नेक अनेकछबि भूषणा बिशालकी। मातु करै आली वह मृग मदवाली आड़ सौति मदगंजनीहै अंजनी गोपालकी ४ ॥ अथ संयोग शृंगार वर्णनम् ॥ अंतर लजात मृग मद पछितात जात वारिजात हारिजात सौरभ सतत है । श्रीपति अगार मैं अगर उदगार ऐसो डगर बगर छबि छाजत अनन्तहै ॥ हीकरनसुख मुख सौतिन मसी करन बदन जसीकरन जीकरनयंत्र है। पति सों रसीकरन रतिको हँसीकरन सीकरन प्यारी को बसीकरन मंत्रहै १ चन्द्रद्युति मन्दभई फंदसें फँसीहैं आलि ननद करैगी शोरछोड़ि गलबाहैं है। सासु सतरै है जेठ पतिनी रिसै है बंकबचन सुनैहैं अरे जोरि युगपाणिवाहैं ॥ नौलीहै गिनती औ बिनती इहालौ देव कियो काहा चाहत रहनि कुलकानिदै। दानदेरे जानको निदान निर्दई कान्ह बसी सारी रैनि मोहिं अब घरजानदै २ कुन्दकी कलीसी दंत पंक्तिकी मुदीसी दीसी बीचबीचमीसीरेखअमीसी गरकिजात। बोरीत्योंरचीसी बिरचीसी तिरछीसी लखैरीसोअँखि याकैसफरीसी बै फरकिजात ॥ रसको नदीसी दया निधिको नदीसी थाह चकित अरीसी रति डरीसी स रकिजात। प्यौफँद फँसीसी ऐसी होतिजो कसीसी ताकेसीसीकरबे में सुधासीसीढरकिजात ३ सोयेसब लोग तुम आये भले योग मेटो बिरहबियोग उरआनँद

लपटकै । काहूकोन डरौ परयंक मिलि परौ परिरंभ प्यारे पारौंतुम्हें कैसे कोऊ हटकै ॥ लीलाधर पीतपट न्यारोकरि धरो बनमाल परिहरो जामें नेकहू न अट कै । देहरीकी वा तरफ केहरि ननदपरी येहरि सँभा रु पग जेहरि न खटकै ४ ॥ अथ वियोगशृंगार वर्णनम् ॥ ऊब तहैं। डूबतहैं। डरातहैं। डोलतहैं। बोलत न काहे प्रीति रीति न रितै चलै। कहै पदमाकर त्यों उससि उसास नसों आँसू वै अपार आय आँखिन इतैचलै ॥ औधि हीके आगम लौं रहत बनेरीरहौ बीचही क्योंबैरीबन्धु बेदन बितैचलै । येरे मेरे प्राण कान्हप्यारेके चलाच लमैं तबतौ चले न अब चाहत चितैचलै १ प्राण प्या रोगेहते पयानकरि गयो आली मानो मेरीदेहते पयान प्रानकरिगे । कहै गिरिधारी तबहींते सुधि बुधि गई आनँद बिनोदनके मन्दिर उजरिगे ॥ जाकेअंगलागि लूट्यो अमितअनंगसुख अंगते बिरहज्वाल जालन से जरिगे । जासों कबौं अंतर न हारनके परेहाय तासों अब अंतर पहारन के परिगे २ श्याम श्याम सघन बिराजैंघनचारोंओर कौंधा बहुतरल गगनबीच छ- हरै । दादुर औ मोर चहूंओरनते शोरकरैं मडीमहि मण्डलमें महाजल लहरैं ॥ प्रीतमप्रवास तासों दाहत वियोगी बाल कौन्होंजू अनंगजोर बैठी अटाकहरैं । छिनकमें पौढ़ै छिन बैठै परयंकपर छिनक में करै हाय हाय उठि ठहरै ३ आई सुधिपीतम की भूली सुधि और सब कौन समुझावैना सहेलीकोऊसाथमें ।

अतिही दुचित्त चित्त लाये सूने सदन में बैठी प्यारी धरिकै वदन एक हाथमैं ॥ चित्रकैसी लिखीनेक डोलति न बोलति न बिरह की मोटधरि दीन्हीं बिधि माथमैं । सुनत न बात सूनेहोगये सकलगात बैठीध्यान कीन्हें मन दीन्हें प्राणनाथ मैं ४ ॥ अथहास्यरस वर्णनम् ॥ हँसी हँसि भाजै देखि दूलह दिगम्बरको पाहुनी जे आवैं हिमाचलके उछाह मैं । कहै पदमाकर सुकाहू सों कहै को कहा जोई जहां देखै सोहँसेई तहां राह मैं ॥ मगनभयेई हँसै नगन महेश ठाढे औरै हँसैं येऊ हँसि हाँसिके उछाह मैं । सीशपर गंगाहँसै भुजन भुजंगा हँसै हाँसिहीको दंगाभयो नंगाके विवाह मैं ॥ अंबर तें सबके कदम्ब चढि बैठोजाय हास्यरसमाहीं कबौं नाहीं कबौं हां करै । कहै गिरिधारी नीचे खडी ब्रज नारी सब अंगन उघारी बनवारीसों हहाकरै ॥ हाथ जोरि करौ दिननाथ को नमस्कार कहै ब्रजनाथ तौजू तुम्हरोकहाकरै । बिना रवि बंदनन देहैंदोऊकरजोरि बंदन करौतौ देय बसन बिदाकरै २ कहा कहौं नाथ क लिकालको जितैहांनहीं जानिये कितैहांनेक सुनतनहीं करी।कविमाधवलालदोषदीजै कौनन्यावबिन हाथपांव होकैजिनकाठकोभगाकरी । बिनडरकीन्हेंमहापातक अनेकहम घातक यमनहूंतेलगी औलगाकरी । पावन पतित झूठीकीरति सुनायतेरी हायमेरो बेदन पुरानन दगाकरी ३ लक्षण तिहारे तौ प्रतक्षण लखैपरै बडे २ रूमसखि लाखमेंन दुरतो । सांपबैलबाघ बिषराखसूढ

बांधैफिरी गंगको प्रवाहहेरि हुबइतेभुरतो ॥ घासी रामसुकवि देवइया हरहोते कहां चंदजातो सिकिल न सकौ रंगघुरतो । गौरिजोनहोती अरधंगमेंगिरीश कोसो सांचीसुनी भूतनाथ खयबेको न जुरतो ४॥ अथ करुणारसलिख्यते ॥ आंसुन अन्हाय हायहायकै कहत सब औध पुरबासीके कहायो दुख दाइये । कहैपदमाकर जलूस युवराजीको सुयेसोकोधनीहै जायजाके शीश वाहिये॥सुतकेपयानदशरथनेतजे जोप्रानबाढयोशोक सिंधुसे कहांलौंऔगाहिये । मूढमंथराकेकहे बनको जो भजेराम ऐसी यहबात केकयीकोतो न चाहिये १ अक्रूर गोहन चलत मनमोहनके बसुधा बिछोहन के बीजनको बोवती । कहैगिरिधारी धीरधारिननाधारी धीर करुणा गंभीर ब्रजमंडलबिगोवती ॥ नंदकी यशो मतिकीगोपनकी गोपिनकी बिपति बखानै कौन आं सुनसों धोवती । चोखतीनलया चाराचरती न गैया मिलि जलकोगिरैया औचिरैया बनरोवती २ कदम की डालीचढिकूद औबनमाली कोपिकालीदहभीतर बियोगबीज ह्वैगयो । कहैगिरिधारीधायेनगरकेनारी नर भईभीर भारी नीरनैननतेच्वैगयो ॥ नन्द नँदरानी औररानीपरैं पानीबीच शोकशोक अररस शोकबीज ब्वैगयो । यमुनासमानो आजु ब्रजको सतन हाय यशु मति सूनीबन सूनब्रजह्वैगयो ३ कामरीपरीहै कहूं ल- कुटीडरीहै कहूं बांसुरीधरीहै अब इन्हैं कौनधरिहै । कहैं गिरिधारी कोरचैगो रसरासके न बिरांचबिलास

वृन्दावन में विहरिहै ॥ यशुमतिरानी दीन बानीसों कहत आजु गोरसके काज कौन गोसोंआनि अरिहै । संग ग्वालबालन के खेलि है को ख्यालनको लालन विनारी गोपालनकोकरिहै ५॥ अथपुनःकरुणारस ॥ ग्राह गहे गजको अगाधे जल लियेजात त्राहि त्राहि भाषत भोभूरिभरेडरते । धायकै गोविन्दआय फन्दते निफन्द कीन्हों दीन्हेंवाहवारजैसो काढ़िलीन्होंसरते ॥ चन्दि काप्रसादजू विचारकैदेवसब देख्योहम आवतनाभूमि मैंअधरते । बारितेमुरारि कैधौंकढ़ेग्राह आननते कंज तेनिकरि कैधौंआयेकरीकरतें १ उठे कोपिकाले प्रल यकालवाले धाराधर मुराडादराड धारेलगे धारैचहूं ओर पर । कहैं गिरिधारी अकुलाने ब्रजबासी सब पाहि पाहि आरत पुकारते निहोरपर ॥ मोरपंखवारे रख वारे ब्रज गाइनके तोबिना न कोऊ रखवारो यहिठौर पर । छोभकरि छोहनीते उठायलीन्हों छोनीधर छा यदीन्हों छत्रसों छगुनियांके छोरपर २ गोबैंग्वाल बाल अहिगालमें समानेजाय जानतनहुते ख्याल खल बल जूटको । कहैं गिरिधारी पीछे रहिगे अकेलेका न्ह करुणा निधान धरे करुणात्रिकूट को ॥ देवकी नँदन चलि बदन अघासुरके पैठेआय पैठतही कीन्हों यह ऊटको । पीलके समानबढ़े फैलमेंफुलायोतन फू लिकै पानीको फन फाटिगयो फूटको ३ जानिपरी आनिकै अवाज कान्हजूके कान जानिजन आपनो अनाथकी पुकारयो । छोड़यो सिंहासनऔ छांड़यो

पन्नगासन औ छोड्यो गरुडासन सो धायो परमार थी ॥ नन्दन सों कविप्यारी कमला अकेली छांड़ि हाथन हथ्यार छोडो छोडो रथ सारथी । धाये ब्रज राज गजराजकी अरजजानि आयेचलि वाहीके मनो रथ महारथी ४ ॥ अथ रौद्ररसवर्णनम् ॥ बारि डारिडारों कुम्भकर्णहि बिदारिडारौं मारौं मेघनादै आजु जो बल अनन्तहौं । कहैं पदमाकर त्रिकूटहिको ढाहिडारौं डारत करेई यातुधानन को अंतहौं ॥ अच्छहि निर च्छकरिकच्छहवैउचारौं इमि तोसे तिच्छ तुच्छनको कछुवैन गंतहौं । जारिडारौंलंकहि उजारिडारौं उप बन फारिडारौं रावनको तोमैं हनुमन्तहौं १ मारिडारौं अनुज समेत यहिखेत आजु मेटिडारौं दीरघ बचन निजगुरुको । सीतानाथ सीतासाथ बैठेदेखो छत्रतर यहि सुखसोखौं शोक सबहीके उरको ॥ केशोदास सबिलास बिश्वबिसे वासहोय केकयीके अंगअंग शोक पुत्रज्वरको । रघुराजजूको राज सकलछिडाइलेउँ भर तहिं आजु राजदेउँ प्रेत पुरको २ गोपिन सों कहत गोपाल दानदीन्हेंबिन जाननहिंपैहो करो केती उबरे सीको । कहैं गिरिधारी राजडेरहि सुनाय कहा मोहिं डरपावतिहौ डरत न ऐसीको ॥ जाके बल बिक्रम को तुमको गुमान ताको पलमेंमिटाऊं बलबिक्रमको वेसी को । मालहि पछारिडारौं फारिडारौं मुष्टिकहि मारि डारौं कंसहि संहारिडारौं केसीको ३ प्यारो रामचन्द्र को अनैरो दूत कोप्योबीर जासोंबल बाजीलागो प्रभु

के प्रमानकी। भनै भगिवंत लागी रावनै उदासी सब देवन सुधासी हांकहोत हनुमानकी॥ पूंछमें न आंच लागी बाढ़िकै अकाश लागी आगिलागी देखिभागी भीर यातुधानकी। मयसुता शंकलागी प्रियादौरिअं-कलागी लंकलागी जरन जुडानलागी जानकी ४॥

अथ बीररस बर्णनम्॥ चरिओरसमुद बिहदनदहदकीन्हें दुरघट ओटकोट पाय पुरपरके। कठिन करालकाल दण्डते बिशालबली कोटिन कृपानगहे बीर निशाच रके॥ सहज अशंकबंक रहत निशंकसदा बरणौ कहां लौं कबिनन्द बरहरके। बैन कपिबरके सुनतहियहर के सोफरके उदण्ड भुजदण्ड रघुबर के १ सोहै अस्त्र वोड़े जेनकोड़े शीश संगरके लंगर लँगूर उच्चउच्चके उ तंकामें। कहै पदमाकर त्यों हुंकरत फुंकरत फैलत फुलात फाल बांधत फलंका मैं॥ आगे रघुबीर के स मीरकेतनैके संग तारीदै तड़ाक तड़ातड़के तमंका मैं। शंकादै दशाननको हंकादै सुबंकाबीर डंकादै बिजैको कपि कूदिपरे लंका में २ डहडहे डंकन के शबद निशं कशुनि बहबहे शत्रुन के सैना आनि खरके। कबि हरिकेश इत चम्पतिकोलाल चढ्यो उतै तुरकान दल उमड़ि घुमड़िके॥ हाथीको उमड़माड़ू रायकी घुमड़त्यों त्यों लाली उघरत मुखछत्रशाल बरके। फराकिफराकि उठैभुजा अस्त्र बाहिबेको कराकि कराकि उठै कोर ब खतरके ३ दौड़ेकालकिंकर करालकरतारी देत दौरी कालीकिलकत सुधाके तरंगते। कहैं हरिकेश दांतपी

सत खबीसदौरे दौरे मएडरीक गीध गीदर उमंडते ॥ बी रजयसिंह जंग जालिम हुकौनपर करकाई भुज औ चढ़ाई भौहँभंगते । भंगडारि सुखते भुजंगडारि भुजते हरषि हर दौरे गौरी डारि अरधंगते ४॥ अथ भयानकरस लिख्यते ॥ पूरि रह्यो पातकमें कलही कुचालीकुर का याभई कम्पित मलीन तनधारे को । देखि यमसौंहैं यमु नाकोलियो नामउन होत अन्तकाल नन्दलाल रूपधा रेको ॥ ग्वालकबि त्योंही यमभाष्यो हाय हाय करि कोऊ जनि जाऊ जो गयेतो मारिडारे को । दूरिकरि देगो दीह रौरवन मूंदिकरि चूरकरिदेगो अंग अखि ल हमारेको १ झलकत आवैझुंड झीलम झलानिझा प्यो तमकत आवैतेग वाही औ सिलाही है । कहैं पद माकर त्यों दुंदुभी धुकारसुनि अकबकबोलै योंगनीम औ गुनाहीहै ॥ माधव को लाल कालहूते बिकराल साजि धायो सैनयेदई दईधौं कहा चाहीहै । कौनको कलेऊ धौं करैया भयो काल अरु कांपै यों परैया भयो गजब इलाही है २ अति बिललानी यातुधानीक है गेहगेह रावन समान आन दूसरो भयानको । काहेते न बूझेउ आंखि बीसहू ना सूझेउजाको मूढ़मतिक्रोही द्रोहीभयो भगवान को ॥ सुकबि सुवंशकहै आनि ज गदम्बे लैके निपट निशंके बंश नाश्यो यातुधान को । काहकीश कला कूदिबलाके समान परै रावण मह लापर हला हनुमान को ३ माडव उज्जैन भानि भूषन बहेलसेलौं सिंगलसरोज लौं परावने परत है । गौड़

थाने तिलगाने करनाटक फिरंगाने हफसाने हिम्मति
की हद हहरत है॥ साहू के सपूत शिवराज शमशेर
तेरी सुनि गढ़पती गढ़धीरजा धरतहै। बीजापूरगोल
कुण्डा आगरे दिलीकेबीच बाजेबाजे दिन दरवाजे उ
घरत है ४॥ अथ बिभत्सरस वर्णनम्॥ नटकी समान मर
कटभट भालुबहु दैत्यनके युत्थबीच चंटचट चटकत।
मारे खड्ग खूनन के घायबोलें भकभक योगिनी ज
मात लोलू घटघटघटकत॥ सुकबि सुबंश कहै गिरे
गीध झुण्डनसों रुण्डन समेत मुण्ड गटगटगटकत। त
ड़पि तड़पि तहां पौनतनय महाबीर असुर बिलन्द
महि पटपटपटकत १ कोपि नन्दजूके भट असुरअनन्त
नको मारि गजदन्तन बिदारि देहदई है। कहै गिरि
धारी एकपरे अंगभंग एकै परेहैं अपंग क्षिति घायल
न छई है॥ मुष्टिक चाणूरको है कहूं कंस क्रूरको है
औरको गनावै युत्थयुत्थनकी सईहै। श्रोणित सुरंग
तासों होरही सुरंगभूमि रंगभूमि आजु रणरंग भूमि
भईहै २ औझरीकी झोरीकन्धे अन्तनकी सेली बंधे
मुण्डन कमण्डल खप्परकियो फोरिकै। योगिनी ज
मात जोरि झुण्डबने तापसमे तीरतीर बैठेहैं समरसरि
खोरिकै॥ श्रोणितसों सानिसानि गदासतुवासे खात
एकैएक पीवतबहोरि घोरिघोरिकै। तुलसी बैताल
भूत साथलिये भूतनाथ हेरिहेरि हँसत शिवासों हाथ
जोरिकै ३ श्रोणितसलिलबर बानर सलिलचर गिरि
बालिसुत बिष बिभीषण डारेहैं। चमर पताका बड़ी

बाड़वा अनलक्षम रोगारिपु जामवन्त केग्रावविचारेहै॥ बाजिक्षुर बाजि सुरगजसे अनेकगज भरत सबन्धु इन्दु अमृत निहारे है। सोहत सहितशेष रामचन्द्र कुशलव जोतिकै समर सिन्धु सांचेही सिधारे है ४॥ अथ अद्भुत रसवर्णनम्॥ सातदिन सातराति करि उत्पातमहा मारुत झकोरै तरुतोरै दीहदुखमें। कहैंपदमाकर करीत्योंधुम धारनहू एतेपै न कान्ह कहूं आयो रोषरुखमें॥ छो रि छिगुनेकेछत्र ऐसो गिरि छायराख्यो ताकेतरेगाय गोपगोपी खरी सुखमें। देखिदेखि मेघनकी सैन अकु लानोरहै सिन्धु में न पानी औ न पानी इन्द्रमुख में १ माटीखात मोहनको पायो कहूं मातुगहि सांटीडरपा यो प्रीति परिपाटी टारिकै। कहै गिरिधारी मुख दे खतही देखिपरे देखे अनदेखे सबलोक निरधारिकै॥ खम्भालागि शोचत अचम्भासानि छोहरेको अद्भुतरंग भरे कौतुक निहारिकै। यशुमति चापिरही रसनारद न नँदनन्दन दिखायो जबबदन पसारिकै २ यमतेडराय गृहलोगन छिपाय एक बूड़ोजाय पापीगंगरंगनकेदंगा ते। ताहीसमा छूटिगयो पापसों पवित्रभयो सुखनके योग लाल तरलतरंगाते॥ धाय आपधनद बिमानलै प्र थमनन्दी धाई आठौसिधिधाय धारके प्रसंगाते। भंग भरे मुखमें भुजंगधरे अंगवह गंगधरे शीशपै निकसि आयोगंगाते ३ गोरीगरबीली जाको गमन गयंदकोसा गरे मुक्ताहलको गजरा निरालावह। कज्जल कलित दृग ललितलोनाई भरे बलित उरोजनमें मृगमदआला

वह ॥ ग्वालकवि रविजा तिहारेतीरन्हाई आई धाई लेनदेवनकी अवलि बिशालावह। शीशादीप सूखये पहुंचिपाहिलेईगये पाछे श्याम रूपह्वै सिधारी नवबा लावह ५॥ अथ शांतिरसवर्णनम्॥ दामिनी समान चारुचंदसो बदन देखि कामिनी मदनमोह मायामेंनफंदेरे। सुतके सुता के वनिताके ममताके हेत धायधाय थाके अब छांडु फरफंदेरे॥ ध्याउ रघुनंदै करिदूरि दुखदंदै सुख सम्पति अनंदै ह्वैहै कीरति बलंदेरे। येरेमतिमंदै सब छांडु छलछंदै एक आनँदके कंदै रामचंदै क्योंनबंदेरे १ पापसोंगढ़ीहै हाडचामसों मढ़ी है तैसेनरक कढ़ीमहा अशुद्ध भावभोंड़ीहै। मज्जामांस मूत्रबीठरोम औरुधिर भरी कफपित्तवातके विकार गड़ गोड़ीहै॥ तापैकाम मोहमदलोभसें ग्रसितसदा सबकाल काहू बिधिकुमति न छोड़ीहै। कहै हरदासहै भजनकृत शुद्धनातो निपट निकामदेह निलज निगोड़ीहै २ नातीपूत नातगोतइष्ट मित्रभाई बंधु ठौर ठौर भावनजू ठगिसे खरेरहैं। शाल औ दुशालजाल नानामणि मुक्तमाल भूषण अनूपबैस दूषण भरेरहैं॥ कांधेचले चारिहीके बांधेरहैं हाथी घोड़ पालकी पलंगपीठ ऊंटहूपरेरहैं। कर्मविटभस्म भये जितने बड़े औ छोटे प्राणगे अगोटे धनकोटिन धरेरहैं ३ भूषन बसन बीस रतन अनेकजाति घोड़ेपील पालकी अनूप छबिधामकी। कहा नरनाह कहाभये बादशाहकहा शाहनकेशाह जौनदेहै परिनामकी॥ बेनीकबिकहै ख्यालफालमें बितावैदिन पालैखलख्यालै

कैपखालै जसघामको। मनहीको मनरहिजातींअभि लाखैं जब मूंदिगई आंखैं तबलाखैं केहिकामको ४

अथदशनायकावर्णनम् ॥ दोहा ॥ प्रोषित पतिका खंडिताकलहंतरितानाम॥ विप्रलुब्ध उतकंठितावासकशय्यावाम १ स्वाअधीन पतिका कहत अभिसारिका बखानि ॥ बहुरि प्रवासित प्रेवसी आगतपतिका जानि २ कहौ अवस्था भेदयुत दशौ नायकानाम॥ तिनके लक्षण लक्षिसब बर्णाकहौ अभिराम ३ ॥ अथप्रोषितपतिका ॥ दोहा ॥ बालमबसतबिदेशमें जोबियोग अकुलाय। प्रोषितपतिका नायका ताहिकहत कबिराय १ ॥ कवित ॥

आलीमोहिं लागतहै वाबिन खलकखाली कबौं मुकतालीके बिभूषण करैनहीं। कहै गिरिधारी कलपरत न केहूनेकु पतिकापरेहूं कल पलकपरैनहीं॥ रैनदिन घेरेघर रहत घनेरेलोग लाखनकी मौजवारे आंखन अरैनहीं। रहत बसोई परदेशवारो प्यारो वह हियरे हमारेते बिसारे बिसरैनहीं १ लागत बसंतके सुपाती लिखीपीतमको प्यारीपरबीनहै हमारीसुधिआनवी। कहैपदमाकर यहांकोयों हवाल बिरहानलकीज्वाल सों दवानल ते मानवी॥ ऊबको उसासनको पूरो परगासा सोतो निपटउसास पौनहूंते पहिचानवी। नैनन कोढंगसोअनंग पिचकारिनते गातनको रंगपीरेपातन तेजानवी २ बिरह तिहारेलाल बिकलभईहैबाल नींद भूखप्यास सिगरी बिसारियतुहै। चोरीकैसीबातचंद्र माहँते छिपाइयतु बसननतानिकै बयारिवारियतुहै॥

कहैमतिराम कलाधरकीसी कलाछिन जीवन विही न मीनसी निहारियतुहै । बारबार सुकुमार फूलनकी मालऐसी मारकै मरोरनि मरोर मारियतुहै ३ आयो ऋतुपावस न आयोपति प्राणप्यारो मेघन बरजु आली गरजि सुनावैना । दादुरन डपटु न बकि बकि फोरैं कान चातक बरज अबपीव रटिलावैना ॥ बिरहा बिथा मैं मैंतो ब्याकुल परीहौंदेव जुगुनूचम कि चित चिनगी चलावैना । कोकिला न गावै मोर शोरना मचावै घन घुमड़िनधावै जौलौं श्यामघर आवैना ४॥ अथ खंडिता ॥दोहा ॥ आन तियारतिचिह्नधरि आवैपिय परभात। दुखखंडित सोखंडिता बरणातकविअवदात ॥ कवित्त ॥ वैओपरयंक पैनवेली निरशंकजहां जागी ज्योतिजाहिर जवाहिरकी जागियों । कहैं पदमाकर कहूंते नंदनंदन हूं औचकही आये अलसाये प्रेम पागेयों ॥ झपकीहै पलक पियाकेपीकलीक लखि झुकि झहराय हूंननेकु अनुरागै त्यों । वैसही मयंकमुखी लगत नअंकहुती देखिकै कलंक अब येरी अंकलागै क्यों १ जावक लिलार ओठ अंजनकी लीकसो है पांयन अलीक लोक लोकना निसारिये । कविमति राम छाती नखछत जगमगै डगमगै पगासूधे मगमें न धारिये ॥ कसकै उघारत्तहौ पलकपलकयाते पलका में पौढ़िश्रमरतिको निवारिये । लटपटे पेंचसिरबात न कहतबनै अटपटेपेंच सिरपागके सुधारिये २ओढ़न में काजर लगाये काहूं कामिनीको भामिनीके भौन

आये गजरके बाजते। कहै गिरिधारी सेदपानीसहि
जानी लखि नागरि सयानी वा रिसानी ब्रजराजते॥
भौंहन भँवाय अनखाय रिसपायवकै बैठी मनभायेतेन
घाये नैनलाजते। चेरिया न करौ ये चरित्र तिरियाके
लाल किरियानकरौ भलीबेरिया विराजते ३ पीतम
प्रभात अलसात आये रोषभरे प्यारी कछुरोष भरे
बचन उचारोना। कहै गिरिधारी उठि आदर अदाब
कियो बोली मृदुमंद मुसक्याय मनुमारोना॥ यद्यपि
सुभावनसों मिलो मनभावनसों नाहको गुनाह तिया
तद्यपि न्यवारयोना। मानिनीके जीको मानजानिगो
सुजानजब करत बिहार हार उरते उतास्योना ४॥ अथ
कलहंतरिता॥ दोहा॥ पहिले पियसों कलहकरि करय
जो पुनि पछिताव। कलहंतरिता कहतहैं जेजानत रस
भाव१॥ कबित्त॥ जाकेकाजबोरयो कुलकानिकोजहा
जअरुजाके काज लोकलाज सकल बहायोरी। जाके
काजहांसी अंगरेजी बृजबासिनकी जाकेकाज नांव
कुलिगांवमें धरायोरी॥ कहै गिरिधारी जाकेकाजको
न्होंयेतो आजुतासोंहौं रिसानीरूसरह्यो मनभायोरी।
सरबस आपनो दयबरबस लीन्हों हायतौन लालहाथ
ते गँवारिहैं। गँवायोरी १ झालरनदार. झुकिझूमति
बितानविछे गहबगलीचा अरु गुलगुलीगिलमैं। जगर
मगर पदमाकर सुदीपनिकी फैली जगज्योति कौलि
मंदिर अखिल मैं॥ आवत तहांई मनमोहन को लाज
मैन जैसीकछुकरी तैसीदिलहीकी दिलमैं। हेरि हेरि

बिलमैंनलीन्हें हिलमिलमैं रहीहैं हाय मिलमैं प्रभा
कीझिलमिलमैं २ ससकि मसकि हियो कसकि कस-
कि उठैताके आप सोतननाकाढ़ो भौनकोनेसें। एक
तानलागे मुकतानके अनेकहार कबसे दराज काजरूपे
सोनसोनेसें॥ भनत कवीन्द्र ऐसेनाहसें,गुनाह बिन
कियोहै बिगार धारदारै कौन टोनेसें। येरी मेरी
कुमतितै कलह करायेअब सुलह करावै कौन सांवरे
सलोनेसें ३ बिनतीकरोरीकै निहोरो करजोरीकर
हाहाकै महान मनुहारी अनुसरी है। घूंघट उघार्यो
होनने मुकनिहार्यो वह छतिउठि गयोधौं अनैसी कै-
सीघरोहै॥ कहैं गिरधारी मो मनाव न रहोरी अबवा-
हीके मनावन की मेरेउर अरीहै। आपते मनाय बीर
लालको बुलायलाव लालकी बलायलौटि मेरेगर प-
रीहै ४॥ अथविप्रलुब्ध्वा॥ दोहा॥ब्याकुलहोयवियोगसों सुनु
पियहोयनभेट। बिप्रलुब्ध्वातासोंकहत सूनीलखै सहेट
कबित॥ खेलको बहानोकै सहेलिनके संगचली आई
केलि मन्दिरलौं सुंदर मजेजपर। कहैं पदमाकर तहां
न पियपायोतिय ज्योंहीं तनतैरही तमीपतिके तेजपर॥
बाढ़त बिथाकी कथा काहूसों कहू न कही लचकि
लतालौं गई लाजहीके लेजपर। बोरीपरी बिथरि क-
पोलपर पीरीपरी धीरीपरी धायगिरी सीरीपरी सेज
पर १ प्यारकरि जीमें प्रान प्यारेके मिलापहेत आई
कुंज मंदिर प्रकाश चंद आधेके। आस पास आली
लिये अगर गुलाबपास भूखन बसन साजि सुखमास-

माधेके ॥ भौनकवि कहैं सुनों देखिके सुखायगई कहै ना हवाल कछु काम अंगदाधेके । दाहि गई देहबिथा लाजते न कहिगई रहिगई बीरी असखात हाथ राधे के २ सकल शृँगार साजि संगले सहेलिनिको सुंदरी मिलन चली आनँदकेकंदको । कबि मतिराम बाल करति मनोरथनि पेख्यो परजंक मैनपथारे नंदनंदको नेहते लगीहै देह दाहवा दहनगेह बानके विलोकि द्रुमबलिन कोवृन्द को ॥ चंद्रको हंसत तब आयो मुख चंद्र अब चंद्र लाग्यो हंसन तियाके मुख चंद्रको ३ लोग नकी चोरी बनकुंजन किशोरी गई लाग्यो हिय होरी हू नदीख्यो घनश्याम है ॥ कहैं गिरधारी अंग अंगन अनंग हन्यो संगकी जनीसों सतराय बोली बामहै । बदेनासहेटमोहिं बादिही बोलाय लाई बिना बन माली इहांखाली पर्यौ धाम है ॥ खाये की अकूती किधौं तेरीमति धूती आजु दूतीतैंकियोरी यूती मारनको कामहै ४॥ अथ उतकंठः ॥ दोहा ॥ ज्योतिय पियके मिलनको अति उतकंठित होय॥ताहि कहत उतकंठिता कबि कोबिद सबकोय ॥ कबित्त ॥ सौतिन के त्रासते रहेधौं औरबासते न आये कौन गासते प्यो करतो तलासतैं । कहै पदमाकर सुबासते जवासते सुफूलनकी रासतैं जगीहै महा सासतैं ॥ चांदनी बिकासते सुधाकर प्रकासते न राखतहुलासतैं न लावखस खासतैं । पवनकरू आसतैं न जाउ उठि पासतैं अरी गुलाब पासते उठाव आस पासते १ यमुनाके तीर बहै शीतल स-

मीर जहां मधुकर मधुर करत मंद शोर हैं। कवि म-तिराम तहां छबिसों छबीली बैठी अंगनते फैलतिसु-गंध की झकोरहै॥ पीतम बिहारी के निहारिबेको बाटऐसी चहूंबोर दीरघ दृगनि करी दौरहै। येक बोरमीन मनो येकबोर कंजपुंज येकबोर खंजनचको-र येकबोरहै २ सारी दरदावन किनारीदार साजि प्यारी मदन मनोरथके उद्योत बितवतिहै। कहै गि-रिधारी निधि चन्दउजियारी चारुनिज मुखचन्दकी उजारी जितवतिहै॥ डगर निहारत बिहारीजू तिहा-री ऐसे चंचलदृगन मृगमद ऋतवतिहै। यमुना तटीमें बैठिके यकघटीतेंचितपरी चटपटी चहुंबोर चितवति है ३ बैठी रंग रावटी निहारीमें पियाकोबाट आये न बिहारी भई निपट अधीरमैं। देवकीनन्दन कहै श्याम घटाघेरिआई हेरिबगति प्रलयको डरानी बलबीरमैं॥ सेज मैं सदाशिवकी मूरति बनाय पूजी तीन डेरतीनि हूंकी कीन्ही ततबीर मैं। पाखनमें सांवरो सुलाखन अखैवट ताखनमें लखनकी लिखी तसबीरमैं ४॥

अथ वासक सज्या ॥ दोहा ॥ मनभावन मो सेजमें ऐहैं आजु बिशेखि। सजैसेज भूषण बसन बासक सज्या लेखि॥

कवित्त॥ सोरह सिंगार कै नवेलीके सहेलिन हूंकीन्ही केलि मंदिर में कलपित केरेहैं। कहै पदमाकर सुपा-सही गुलाब पास खासे खसखास खसबोइनके ढेरेहैं। त्यों गुलाब नीरन सों हीरनके हौज़भरे दंपति मिलाप हित अरती उजेरेहैं॥ चोखी चांदनीन पर चौसर च-

मोलिन के चंदनकी चौकी चारुचांदीके चंगेरे हैं १ केस-
रि कनक जहां चम्पक बरण कहां दामिनीयो दुरि
जात देहकी दमकते। कबि मतिराम लोने लोचन ल-
पटि लाज अरुण कपोल कामतेजकी तमकते ॥ पग
के धरत कल किंकिनि नेवर बाजे बिछिया झमकउ-
ठै येकही झमकते । नाह सुख चाहि चितयोंचकहंस-
ति चौंकि परै चन्द मुखी निज चौंककी चमकते २
बेसरि बिराजै राजै केसरिको अंगराग नखतसे फूले
मांग मोतीबड़े वोजके । कहैंगिरिधारी रतिमंदिर ओ-
हारे लगु आसपास फैलत फुहारे छबि फोजके ॥ सेज
रंग में जपै सलोनी साजिबैसी आजु साजे साजमंजु
लन सरस सरोजके । लाजभरे लोचन बिलोकत
पियाकोमयु मनमन करत मनोरथमनोजके ३सासुको
कोहाय नंद ताहूसों रहीरिसाय जेठाहू सोयेंठी अति
ऐसी गतिगाहीहै । देवरसों नेवर पुहावैकेसिसहिरूठी
दासीसों अंगूठीकी उदासी चित चाहीहैभनत कवीन्द्र
बाल बसकैकोरजनी में सजनीसुबास पास राखी मह
महीहै ॥ पैली और गैलीनाहीं आवनकी कैली ताहि
कोठरी अँध्यारीमैअकेली सोइ रहीहै ४॥ अथस्वाअधीन
पतिका ॥ दोहा ॥ स्वअधीन पतिकाकहति पीतम जासु अ-
धीन। देखिरूप गुनशीलशुभमोहे प्यामप्रबीन॥ कबित्त ॥
पीजिये सदाई रूपरावरेको आंखिनपै कीजियेकहाजू
लोकलाजकरिबोपरै। मेरेहेतरह्योघरघेरे घनश्याममो
हिंबोलतबिलोकतहँसत डरिबोपरै ॥ कहैगिरिधारीक-

हूं लोगचरचैंगे तौ रचैंगे परपंच यातेह्यांते टरिबोपरै। लालअब जावचलिजायगो चवावह्यांतौ गोकुलमैंफूंकि फूंकि पांव धरिबोपरै१ चाहभयो चंचल हमारोचित्त नौल बधूतेरी चाल चंचल चितौनमें बसतहै। कहैपद माकर सुचंचल चितौनहूंते औझकउझकि झझकनि में फँसतुहै॥ औझक उझक झझकनिते सुरझि वेश बांहोकी गहनि माहिंआय बिलसतुहै बांहोकी गहनि ते सुनाहींकी कहनिआयो नाहींकी कहनिते सुनाहीं निकसतुहै२ पुरबधू परबधू तिनसो न जोरडीठि तेरी वेरहेरे हेरियत हरबरसों। कंतवै हमारे परदेशमें बिताये़द्यौस बीतैंकैसे पलपल बीतत पहरसों॥ धन्यतेरो भागभटू भावतोतिहारो न्यारोतेरेरंग राच्योतजैघरिको न घरसों। सौतिजन सालेतीको सालसो तिहारे बस लालह्वै रहोहै मालतीको मधुकरसों ३ जादिनतेनौल बधू आई गौनहाई वह तादिनते लालन कहाधौं मन ऊटीहै। रात्योदिन बदन निहारत रहततासु तजत न सदन बडोई प्रीतिजूटीहै॥ ढारतहै चौर औ सुधारत अलक खुली खलकै बिहाय लाह गोपिन की छूटी है। मोह्यो वनमाली अलीकीजिये उपायकहा कैसी वा बधूटी डारि दीन्ही कौनबूटी है४॥ अथअभिसारिका॥ दोहा॥ साजि सकल भूषन बसन जाय जो पीतमपास। ताहि कहत अभिसारिका जेकबि बुद्धिबिलास॥ कबित्त॥ मौलश्री मंजुलकी गुंजनकि कुंजनको मोसो घनश्याम कहिकामकी कथैगयो। कहै पदमाकर अथाइनको

तजि तजि गोपगन निजनिज गेहके पथैगये ॥ शोच मतिकीजै ठकुरानी हमजानी चितचंचलतिहारो चाहि चाहके रथैगये। छीनन छपाकर छपाकर मुखीतुचलु वदन छपाकर छपाकर अथैगये।१ अंगनमें चंदनचढ़ाय घनसार सेतसारी छीरफेन ऐसीआभा उफनातहै। राजत रुचिर शुचि मोतिनके आभरन कुसुम कलित केश शोभा सरसातहै॥ कविमति रामप्राण प्यारेको मिलन चली करिकै मनोरथ न मृदुमुसक्यातहै। पोति ना लखाई निशिचंद्रकी उज्यारी मुखचंद्रकी उज्यारी तनछाहौं छपिजातहै२ सकल शरीर चारु चंदनवलित कियोकेशनमें कलितललित मालतीकली। कहैंगिरिधारीहै सवांरी सेतसारी तैसी सोहत किनारी सेत सेत मुकतावली ॥ निकसी छवीली छीर सागर तरंग ऐसी अंगअंग आजुउफनात आभाउज्वली। जामिनीजोन्हाई में सुकामिनी जोन्हाईसम मिलिकै जोन्हाईमें कन्हाई केमिलैचली ३ उमड़ि घुमड़ि घनघेरिके घमंडकीन्ह्यों निशिअंधियारी कारी सूझत न पंथको। प्यारीवनमालीपै सिधारी बनवाही सांझसालै पंचबानपंचबान केनिखंगको॥ अहिरह्यो पांवगहिपांवरह्यो अहिगहि कौतुक बखानैकौन विषमभुवंगको। लीन्हेलोहलंगर ज्यों सांकरसमेत छूट्योजातहै मतंगमानो नृपतिअनंग को ४ ॥ अथप्रवत्स्यितप्रेयसी ॥ दोहा ॥ सुनैजबानी कंतकी जो अतिव्याकुलहोय। ताहिप्रवत्स्यित प्रेयसी कहतसुकवि सबकोय ॥ कवित्त ॥ लालन तुम्हारो परदेशको चलन

सुनिपलन प्रियाके जलकन भरियतु है। कहैंगिरिधारी नईप्यारी पियरायगई गहिगहि गोदबीच नारीधारियतु है॥ मोहन जू ऐसो चकचोहट बढ़ायचले मीठको दिखाय जैसेईंट मारियतु है। कौनवहरीति कौनप्रीति सिखोप्यारे लाल कालिहलाये गौन आजुगौन करियतु है १ कसकुच कंचुकी सोबिरचु बिमलहार मालतीकेफूल येधरेई कुम्हिलायगे। गारुगोरी चंदनसंवारु अंग आभरन दीपक उचारुतम छिति परछायगे॥बार धूप अगर अगारधूप बैठीकहा आजु अमरेश तेरेबदलि सुभायगे। आईसांझ सरस सोहाईसेज साजुयह कहत सुवाके आसुआके नैन आयगे २ सौदिनको मारगतहां को बेगिमांगी बिदा प्यारे पदमाकर प्रभातराति बीते पर। सोसुनि पियारी पिया आगम बराइबेको आसुन अन्हाय बोली आसन सुसीतेपर॥ बालम बिदेशतुम जातहौ तौ जावपर सांची कहिजाव कबऐहौ भवन रीतेपर। पहरके भीतरकै दुपहर भीतरकै तीसरे पहर कैधौं सांझही बितीतेपर ३ मोहनललाको सुन्योचलत बिदेशभयो बाल मोहनीको चित निपट उचाटमें। परी तलवेली तन मनमें छबीलीराखै छातिपर छिनकु छिन कुपांव बाटमें॥ पीतम नयन कुवलायनको चंदभयो घरीमें चलैगो मतिराम जेहि घाट में। नागरी नवेली रूपआगरी अकेली रीती गागरी लैठाढ़ी भई घाट ही के बाटमें ४॥ अथ आगत पतिका॥ दोहा॥ जातिय को परदेशते पीतम आयो होय। आगत पति का नायका

ताहि कहत सब कोय॥ कवित ॥ आयो परदेश ते सु-
हायो अति वाको चित मोदभरी मूरति बिलोकि
वृज भूपकी । कहैं गिरिधारी फूल मालिकासीफूली
फवि औरे छबि जालिकाभै बालिका अनूपकी॥ उक-
स्यो उरोज अरु बिकस्यो सरोजमुख ओज आई
आंखिन मनोज महबूबकी। लाली भई तनमें खुसाली
भई मनमें सोसाली भई बिरह बहाली भई रूपकी १
आजु दिन कान्ह आगमन के बधाये सुनि छाये मग
फूलन स्वहाये थल थलके। कहैं पदमाकरत्यों आरती
उतारिबेको थारनमें दीप हार हीरन के छलके॥ कंच-
नके कलश भराये भूरिपन्नन के तानेतुंग तोरन तहांई
झला झलके। पौरिके दुवारते लगाय केलि मंदिर लौ
पदमिनिपांवड़े पसारे मखमलके २ नागर बिदेशमें बि
ताय बहुद्योस आये नागरिके हियमें हुलास निसिया-
नकी। कबि मतिराम अंक भरत मयंक मुखी नेहे स
रसाय रही मति सुखदानकी॥ सुबरन बोलके बतावत
है सुबरन होरैनिजलावतहै छबिमुसक्यान की। आं-
खिन ते आनँदके आंसू उमगाय प्यारी प्यारेको दे-
खावत सुरति सुक्तानकी ३ लटकत आजुलट मुखपरबा-
रबार आनँद उमँगि भरि हियेजिय थरकत। मरकत
भूषन बसन चारुपै धनको परकत मनतनु रुचि सुचि
ररकत॥ छरकत अंगअंग अंगन उछाह लोने ठरकत
ऐसो रूप अंगनते अरकत। सारी सिरसरकतचूराक-
रकरकत आँगिअंग दरकत आंखि बांई फरकत ४

अथस्वकीयानायकालिख्यते॥ दोहा ॥शील सुधाई सुभगता सलज्ज सुलसरालस । गुणअनेक सुक्रियानमें पतिसेवासेंदस॥ कवित्त ॥कोरनिलौं हेरनि औहंसनि कपोलनलौंबोलनि मधुर अधरानिमें लगीरहे । उमड़े सकोच शील शोभा मढ़बड़े नयन लाजबड़े लोगनकी जियमेंजगीरहे॥ कहै गिरिधारी गुणगुधी साधु सूधीसोहै कुलके बिशालकी उमंग उमगीरहे । सूमहिये नेम जो बढ़ाइबेको हेमपिया प्रेमकेबढ़ाइबेकोपंथत्योंपगीरहै १शोभित स्वकीय गन गुन गनतीमें तहां तेरेनामहींकी एकरेखा रेखियतुहै । कहैपदमाकर पगीयों पतिप्रेमहीमें पदमिनितोसीतिया तुही पेखियतुहै ॥ सुबरण रूपजैसो तैसोशील सौरभहै याहीसें तिहारोतन धन्य लेखियतुहै । सोनेमें सुगंधना सुगंधमें सुन्योनसो सोनोऔ सुगंधतोमेंदोनोंदेखियतुहै२ दीपसम दीपति उदीपति अनूपति जरूपके स्वरूप रति रूपहिहरतिहै । कहैपरताप कारिमज्जनसरसमन रंजन पियाकेदृग अंजन भरतिहै ॥ ताहीसमै दूतीदिखलायो आनिभ्रमर लिखि निपटउदास ह्वैउसासन भरति है । सारसबिलोचन बिचारिचितचेति राजहंसनके बंशकी सिपारसि करतिहै ३ परमप्रबीणताई प्रथमसमागममें प्यारीको बिलोकि पियक्षोभ्यो तियलीनजानि । कहै कबितोषपति शोचमेटिबेकेकाज लिखनलगोसो चित्र आपनेकरोजपानि॥कुंभीलिख्यो सिंहनिजजानितालिख्यो सिंहसुत आधोकाढ़ि कुम्भनिबिदारयोनिज कुलबानि । समुझि स्वभाय चित चातुरी बिलोकि प्यारी अंकुश-

रिलीन्हो निजअंक मेटिमोदसानि४॥ अथमुग्धानायका॥ दोहा॥
जोबन आगमकी उमग जाके अंगमेंहोय । मुग्धा तासों कहतहैं कविसबग्रंथ बिलोय ॥ कवित ॥ अंगन में नेक छबि जोबनकी सोहैलगी देखि मनमोहै लगी मोहन सुजानको । कहै गिरिधारी अबहींते याकी ऐसीदुति दिना दशही में रूप जितिहै जहान को ॥ गिरिवर जीतेचले अंकुर उरोजनके भौहैं बंक जीतैचली बंकुर कमानको। लोचनछबीलोके अवश परसनचलेचलेत्यों छबीले केश छुवन छवानको १ एंड़िन अरुनाई अंग औपातिगोराई जंघयुगल नितम्ब पीनताई पकरतिहै। कटि खीनताई लरिकाई लीनताई मुखचन्द्र में जोन्हाई ज्योति जाल बगरतिहै॥ भनत कवीन्द्र पेखि अंकुर उरोजनके पिय हिय प्रेमके खजाने से भरतिहै। कुवरी के तन तरुणाईकी अवाती पेखि सौतिन मन नाभिवाती से परतिहै २ बिसरन लागो बालपन को अयानप सखिन सों सयानपकी बतियां गढ़ै लगी। दृगलागे तिरछे चलन पगमंद लागे उरमें कछुक उससनि सी चढ़ै लगी ॥ अंगनमें आई तरुणाईयोंझलकि लरिकाई अबदेहते हरेहरे कढ़ै लगी। होनलागी कटि अबछटिकै छलासीद्वैज चन्द्रकी कलासी तन दीपति बढ़ैलगी ३ मंदमंद चाललागी चलन गयंदगति चंदमुखी आनँद के कंद दरसातीहै । लागी कछु तनक तिरीछे करै ईछनको मृदु मुसक्यान लागी शोभा सरसती है ॥ भृकुटी कमान लागी कानबंधी तानलागी ता-

हीको बोनान लागी सुद्धि सरसातीहै। सखिन लजान लागी मोहै मन कान्हलागी हेरे जैहि ओर सोसुधासी बरसातीहै४॥ अथमध्या ॥ दोहा॥ जाके तनमेंलाज अरु कामबरोबरिहोय। मध्या तासों कहतहैं महा सु कविसबकोय॥ कवित्त॥ उरज उतंगनको मनिनकोहार दीन्हो कंठै कंठश्री दीन्हीं बाजू बंद बांहको। मंदमंद गतिसों गयंद गति जीतिलीन्ही सखिहून संग लीन्हो लीन्हो चित्त चाहको॥ लाजलाजवती कोबोलावे केलिमंदिर को नेह बरजोरीके मिलावति है नाहको। धाराबश नावगत पूरबको चाहत है लीन्हे जात जैसे हठि केवट पछांहको १ रैन अंधियारी तैसी पावस की घटा कारी उठीअबीकारी झंझा पवनकि झमाकमें। कहैगिरिधारी मनमोहन मयंकमुखी सोवे परयंक रतिरंग की रमाकमें॥ प्यारो अंकभरे उर अंचल सकोलि करें केलिको कलोल कामतेजको तमाकमें। रद्योतमछाय गयो दीपक बुतायतहूं कामिनी लजायरहै दामिनी दमाकमें २ झालरनदार झुकि झूमत बितान बिछेगहब गलीचा अरु गुलगुली गिलमें। जगर मगर पदमाकर सुदीपनकी फैलीजगाजोति केलिमंदिरअखिल में॥ आवत तहांई मनमोहनको लाजमैन जैसी कछुकरी तैसी दिलहीको दिलमें। हेरि हरि बिलमें नलान्हो हिलमिलमें रही हैहाय मिलमें प्रभाकी झिलमिलमें ३ केशरि कनक कहां चम्पक बरनकहां दामिनी योदूरि जातदेहकी दमकते। कबिमतिराम लो-

ने लोचन लपटिजात अरुगा कपोल काम तेजकी तम-
कते ॥ पगकेधरत कल किंकिनि नेवर बजै बिछिया
झमक उठै सकहीझमकते । नाह सुखचाहिचित औ-
चक हँसति चौंकि परै चंदमुखी निज चौककीचम-
कते ४॥ अथ प्रौढ़ा ॥दोहा ॥जो प्रबीन रतिरीति में कामक-
लान उदार । प्रौढ़ा तासों कहत है जाके पति अति
प्यार ॥ कवित्त॥ रमति निशंक मनमोहन मयंकमुखी अं-
कमेंरही जोबसि नवलकिशोरके । कहैगिरिधारीसा-
री रजनी ललासों मिलि कीन्हो केलि कला कामकौ-
तुक करोरके ॥ होत आवै यामिनी को अंत उठिजैहै
कंत याते करै कामिनी चरित चितचोरके । दीपक
बुरावै मुक्तावली दुरावै कलीकौलकी चोरावै यों भो-
रावै चिह्न भोर के १ चहचही चहल चहूधा चारुच-
न्दनकी चन्दक चुनीन चौक चौकन चढ़ीहै आब ।
कहै पदमाकर फराकत फरस बंद फहरि फुहारनकी
फरस फबी है फाब ॥ मोद मदमाती मनमोहन मिलै
के काज साजि मणिमन्दिर मनोज कैसी माहताब ।
गोल गुलगादी गुलगिलमें गुलाब गुल गजक गुलाबी
गुलगिन्दुक गुले गुलाब २ रगमगी सेजपर जगमगी
शोभा चारु मणिनमय मन्दिर मयूखन अथाहकी ।
उदयनाथ तामें प्राणप्यारी और प्राणप्यारोन्माल
कोककी कलानि करत सराहकी ॥ किंकिणी की
नीकी धुनि नूपुर ननाद सुनि सौतिन के बाढ़त
बिषाद बादशाहकी। त्रिभुवन जोतिके उछाहकी ब-

अतिमानों नौबति रसीली मनमथ बादशाहकी ३ प्रीतमप्रभात अलसात आयेदोसभरेप्यारीकछु रोसभरे बचन उचार्योना। कहैगिरिधारी उठिआदर अदाव कियो बोली मृदुमंद मुसकाय मनमार्योना ॥ यद्यपि सुभावनसों मिली मनभावनसों नाहको गुनाह तियतद्यपि निवार्योना। माननीके जीकोमान जानिगो सुजान जब करत बिहार हार उरते उतार्योना ४ अथ नवोढ़ा ॥ दोहा ॥ मुग्धा जहंडरलाजसोंकर नरतिकीचाह। ताहिन वोढ़ानामकरि बरणत सबकविनाह ॥ कवित्त ॥ बैठी बिधुबदनी कृशोदरी दरीचीबीच खींचि पीन अंकपरयंक परलैगयो। भनैपजनेश भुजलपटि ललाके लगीछपटी सुनीबी कर जघन समैगयो॥ गोरीगोरो भोरोमुखसोहै रतिभीति प्रीतिरति क्रमरक्त रतिअंतसो रजैगयो। मानोपुखराजते पिरोजाभयोमानिकसोमानिकभयेते नीलमनिनगहोगयो १ दूसरीहवेलीमेंनवेली को अकेली लखि लाड़िली ललीजो ग्रिरमोर सखियानमें। कहैगिरिधारीलाल ललकि छबीलीबालगहि भुजमालसी लगाय करिखयानमें॥ परबसपरी प्यारी बरबस छूटोचहै उरमें गड़ायनख नाम्ही नखियानमें। भयेतन कंपित प्रसेदकन छायेउठे पुलक सुहाये आंसू आये अँखियानमें २ सुनिके समागमको कांपतमयंकमुखी रतिकीन चाहनेक थिरना रहतहै। दिननकी थोरीगोरी भोरी सब बातनमें नीबी करिबांधी डोरी छोरी नाचहत है॥ कहै मतिरामदिन डूबेप्राण डूबि

आवैं सामुहे बोलाय दौरि पांयन गहतहैं। याही भ्रम
माहीं पियागही आनिबाहीं हमनाहीं हमनाहीं परछा-
हीं सों कहतहै ३ लाईकेलिमन्दिर भोरायभोरि भा-
मिनीको फूलगंध कैफवाम कीन्हीं पौनरुखते। कंचन
कलित अतिकेशरिते रमनीय लीन्हींगहि पीतमप्रसून
सेज सुखते॥ भनैपजनेश भुजभरत हहाके हिये सीबीके
सिमिटिश्याम नीबीदाबि दुखते। अहि करि उछलि
सचोट पन्नगीसी औठिउमठि अरीरीमैंमरीरीकहि मुख
ते ४॥ अथबिपरीत॥ दो०॥ पतिपौढ़ेऊपरत्रियाकरैबैठिरति
रीत। आलिंगनचुंबनकरैताहिकहतबिपरीत॥ कबित्त॥
सिसकत सांसैभरैं बीधेबाहु पांसैभरैं सांसैभरैं रसिक
रसीली चित चोजकी। कहै पदमाकर सुदोऊ बिप-
रीत माह महमही मड़ीमाजा मजुल मनोजकी॥ श्या-
मरंग भीनी झीनी सबज कंचुकी सों फोरि निकसि
रहीहै अनी युगुलकिशोर की। माना रूप सागर ते
उन्नत अनोखी अब आनि कढ़ी काढ़िफोरि कलिका
सरोज की १ नथको चलनि कटि किंकिनी कल-
नि हिये हारकी हलनि उर उरज उतंग की। लंक
की लचक परयंक की मचक इतउत की हचक रंग
रचक सुसंग की॥ अंगन झलक हिये नेहकी छलक
कबिरामजू ललक कोक मिथुन बिहंग की। झूमल
झुमक बिपरीत की घुमक चुभी तियाकीहुमक कैधौं
कुमक अनंग की २ रति बिपरीत में रमत अलबेली
लखि कुंदनकी बेलि सी समकिकै सकुचिजात। बेनी

कवि कहैंविहसति वतरात बिज्जुछटालों छहरि घन-श्याम तन जरिजात ॥ मोतिनकी लरैं अलकावलि के तरेलसें उघरें जुरें यों मुखचंद देखि दुरिजात । शा-खि मानो आगेडारि पाछे पांति तारनकी तमकी ज-मातिमें उभरि लरि मुरिजात ३ प्यारे बिपरीत रति करै प्यारे पीतमसों दुहुनके अंगन अनंग देखि हरषै। भनत कबिन्द्रवेनी पीठही पै परीडोलै पन्नगी सी वाह हेम बल्लरी सी करषै ॥ नखरद खंडन चतुर नारि चु-म्बन कै सीवीकरै पीवै त्योंन सीवी नेम परषै। भाल ते उचटि स्वेदकन परैं कुचन पै इन्दुमनो ईशपै सुधा के बुंद बरषै ४ ॥ अथ सुरतांत दोहा ॥ नेहभरे आलस भरे सकुच भरे रतिरंग। ये नैना अध अधखुले जगे पगे पतिसंग ॥ कवित्त ॥ जागी रतिरंग में रसीली अरसी-ली बैठी सेजपै अकेली आजु आदरसधारिकै। वेनी कवि बेनीके खुलेहैं पेंच मेचक यों पेच पेच छाये मुख मंडल वगारि कै ॥ ताहीमें अरूझो शीशफूल सो अतूल छविसेसा सुरझायलियो प्यारी कर कारिकै। बांधो तमबंधन बिलोकि मानो दिनकर प्रात अरबिन्दन छुड़ायो बंधु लरिकै १ प्यारी रतिरंग प्रात बैठीजीती साफ जंगअंग सुभटनको इनाम बकसतिहै। आंगी दई कुचन भुजनबाजूबन्द दये नूपुर पगन बेंदीभालसो लस-ति है॥ मोहनसो कवि नैन अंजन अधर बीरी जघन दुकूल कानफूल सरसति है। पाछेपरे जानितानि मोह-न कटाक्षन सों बारबार बंधन सों बारन कसति है २

उठी अलसात करिरति पतिसंग बाल होत परभातच-लीआईयुतशंकहै ॥ लागीकाश मीरोछवि सोहत सुगंध मई कुचनपै छतछूटी शोभलटै बंकहै। आलसबलित गात जमुहात मीडैदाग कंजसम हाथ सुखसोहत मयंक है॥ मानहुं कलानिधिको धौलकरिबे के हेत बारिज को नातोमानि धोवत कलंक है ३ छूटिगये सिगरे सिंगार हार टूटिगये तऊवोप उलहत मलगजी सारीते। रदछद अधर कपोलनमें दानकरि नखछतछातीमें ल-गेहैं जेबिहारीते ॥ अलकें बिथुरिरहीं झलकें प्रसेद कन अधखुली खुलीरहीं पलकें खुमारीते। देह पेराई छाई लोचन ललाई सबरातिकीजगाई आईउतरि अ-टारीते ॥ ४॥ अथ ज्येष्ठा ॥ दोहा ॥ बरनत ज्येष्ठकनिकाहि इयहि बिधि ब्याहीदार। करै एकपर प्यारअति दू-जीपै घटिप्यार॥ कबित्त॥ दोऊ छवि छाजती छ-बीली मिलि आसनपै जिनहिं बिलोकि रह्यो जात न जितैजितै। कहै पदमाकर पिछौहै अति आदरसे छ-लिया छबीलो कत बासर बितैबितै॥ मूंदे हरि एक अलबेलीके अनोखेदृग सदृग मिचाउनेकख्यालनहितै हितै। नेसुक नवाय दृग धन्य धन्य दूसरीको औचक अचक मुख चुम्बत चितैचितै॥ १ ॥ पौढ़ी एक सेजमें सलोनी मृगनैनी दोऊआनि नाहपीतम सुधासमूह बर-सै। कबि मतिराम ढिगबैठो मनभावन दुहूनकेहिये में अरविन्द मोद सरसै॥ आरसी दै एक को कह्यो कि निज मुख लखो अरविन्द बारिज बिलासबर दरसै।

दर्पण वारी जौलौं दर्पण देखै तौलौं प्यारे प्राणप्यारीके उरोज हरि परसै २ बैठी हुती आंगन में अंगना अनूपदोऊ उतैफाग खेलिबेको आवत बिहारीको। देखिनन्द नन्दको अनन्दभई दोऊइमि पेखत चकोरीजिमि चन्दकी उजारीको॥ कहै गिरिधारीतहां देखत दुहूंकोलाल डारि दीन्हो दृगन गुलाल सकनारीको। जौ लौं वहकाढै अँखियानते अबीर तौलौं बलबीर परसे उरोज प्राणप्यारीको ३ दोऊ इकठौर जहां बैठीहै जलजमुखी प्यारो तहांआयो धीरताई ताकि नेहकी। नेह सरसाई निरसाई न छपाईछपै समताई सुलहकी कुहूक ज्योंमेहकी॥ भणत कविन्द्र रंगभेदही में अंगद्युति सकैरंग देखिपरी दुहुनकी देहकी। फेरीसारी दैकेलाल सक बहराई पहिराई लालसारी लालसारी जासों नेहकी ४॥ अथपरकीया॥दोहा॥ जोत्रिय करैछपायकै परप्रीतमसोंप्रीति। परकीयातासोंकहत जेजानतरसरीति॥ कबित्त॥ घातपरै कबहूं दुराय कहूं मिलिजात ऐसे दुरडरनेह कहांलौं निबाहिये। आंखिनको आट चकचोहत चढ़ाईरहै आठौयाम श्यामसुख देखोचारु चाहिये॥ कहै गिरिधारी पानपानी मिसि कुजैगात पवनमिसिलोचनकीलाभौंनितलहिये। जानतहै जाननी जहान उपहासी सहि वृन्दाबन वासीकी खवासी ह्वैकै रहिये १ गोकुलके कुलके गलीके गोपगावनके जौलगि कछूको कछू भारतभानै नहीं। कहै पदमाकर परोस पिछवारन के द्वारन के दौरिगुण औ

गुण गनैनहीं ॥ तौलौंचलि चातुर महेलियाहि कोऊ कहूं नीकेकै निचोरै ताहि करतभनै नहीं । हौंतौश्याम संगमेंचोराई चितचोराचोरी बोरतती बोल्योपैनिचो- रत बनैनहीं २ चित्रलै चितेरी चुरिहेरिनि चुरियान लैकै हारलिये मालिनि सुपासहूं खरीरहै । जावकलै नाइन गोसांइन विभूति लीन्हे सांझहू सकारेद्वार घेरि बिन अरीरहे ॥ गैयनके गोड़में गोड़ैयनकी भीरबड़ी सांवरे बिहारी जू सों धीरना धरीरहै । येरी यहिगांव बीच बसिबो हमारो नाहिं पतिव्रत पारिबेकी वि- पति परीरहै ३ पथिक परोसिन न पाहीपतिआपनेको औरै उपपति के सनेहसों सनीरहै । ननँद निगोड़ीनित कोड़िपतिआपनेको परै पै अकंत परकंत सों धरीरहै । सासुऔ जेठानी देवरानी की कहानी कहा चेरी औ चवाइन चवावसोंभरीरहै॥ येरीयहि गांवबीचबसिबो हमारो नाहिं पतिव्रत पारिबे की विपति परी रहै ॥ ४ अथ ऊढ़ा ॥ दोहा ॥ ब्याही औरै पुरुष सों प्रीति और सों कीन । ऊढ़ा तासों कहतहैं सुकवि सुरस परवीन ॥ श्यामल गहीलो गात पट चटकीलो पीलो छैल गर- बीलो यहिद्वार ह्वै निकारिगो । टरिगो हमारो बीर धीरज हियेते आजु रूपकी झलाझलमें घूंघट उघारि गो ॥ मनचित कहैपतिव्रत की कहैको आली रूपको देवालो द्दगद्वार ह्वै निकारिगो । सारीसराश्याम श्या- म पूतरी नवासि गोरी हेरिबो हमारो सो हमारे गरे परिगो १ सूखी सरसीसी भ्रम ब्याकुल बैठी है कहा

नजरि लगी है हरा तोरितोरि नाख्यो मैं। बेनी कवि भोरहीते बावरी सी घूमतहै लाज कछू काज गृह काज अभिलाख्यो मैं॥ ललकै हमारो जीव बोलो ना बिलोको काहे बैन आंखैं मंदिरहीं तातेदीन भाख्यो मैं। पलकै उघारो क्योंन कढ़िजाय आंखिन ते घोर मतिकरै चित चोर मंदिराख्यो मैं २ उरझाइ दुकूल द्रुमन सुरझावै लागै काढ़ै लागै कांटवाहि कबहूंपगन सों। कबहूं नेवाज खुलेकेसन कसनलागै कबहूं गिरन लागै सुंदर अगनसों॥ ऐसेछलछंद कैकै ठाढ़ीहवै रहत यों शकुंतला निपट भई व्याकुल लगनसों। सखिनकी नजरि बराय बराय नारि फेरि फेरि देखति महीपति दृगनसों ३ राजैरसमेरी तैसी बरषा समयरी चढ़ीचपला नचैरी चकचौंधा कौंधा बारैरी। व्रतीव्रतहारै हिय परत फुहारै कछुछोड़ै कछुधारै जलधर जलधारैरी॥ भणत कविन्द कुंजभवन पवन सौरभ सोकौनकोकपायकै परावोहाथ पारैरी। कामकेतु कामफल डोलिडोलिडारैमन औरैकरि डारैये करम्बन को डारैरी४॥
अनूढ़ा नायका॥ दोहा॥ प्रीतिकरै कहुं मीतसोंजो अनव्याहीवाम। ताहि अनूढ़ा कहतहैं जे कबिगुण गणाग्राम
कवित्त॥ ताही ठौर लाल कछु खेलतहै ख्याल जहांबाल कोगमन आगमन दिनरातिहै। जानत न सखीसख्यालखीलखा दुहुनकी लाजमयीनयों लगन सरसाति है॥ उदयनाथ प्यारो इतै न्यारो गात बैठो उतैघात गहे प्यारी कछू न्यारी अटलातिहै। ऐंचिकरअम्बर उरो

जउकसोहै कारि भौंहके लगोहै तिरछो है तकिजाति है १ इतैराजिरही थोरी बैसकी किशोरी और इतै इनहूंकी बनी उमिरिकिशोरकी । कहैगिरिधारीकर तारकी सवारी चारुयुगयुगजीवै यह जोरी बरजोर की ॥ दोऊमन कामना की गरजपूजिबे के काम करत गजानन सों अरज निहोरकी । राधिका बिहारी जूसों ब्याहकी लगन लागी लगन अगारीकोन जानीहुती औरकी २ लालन को पिंजरा निहारि कर लालन केबाल हाथ पटैले रुखाई भरे रितवैं । भणत कविन्द्र नैनखंजन सचावैं दोऊधावैं फिरि आवैं नेहजेरीभरैनि-तवैं॥दोऊ मुसकात सोहै देखत सकात दोऊ जानत न घातकोऊ जात कितकितवैं । सुरुखके मिसप्योसुरुख राखै वहीबासवाकी ओरचाहि बाहुवाकी ओरचित वैं३जैसीलगी हुतीबालपानसे दुहूंकी प्रीतिजैसी बनी-हुतीजोरी सकही मिशालहै । जैसा हुतोमनमें मनोरथ दुहूंके अब तैसोकारि दीन्हो बिधि सुखद बिशाल है ॥ माधवकहत राधा श्याम को बिवाह होतहैंहों सुनि आईनन्दगेहयह हालहै । धोयगये सिगरे कलंक सुनि आईली बड़ीभई हैखुशाली भाग्यशाली नन्दलालहै ४

अथ गुप्तादोहा ॥ रतिकारि करत दुराव जो गुप्ता कहत सुजान । बरणीतीनि प्रकारसन भूत भाव्य ब्रतमान ॥

कवित्त ॥ पंकपायलेनको गुलाबकोबढ़ीहै डारैंबारीकी मजारी शोभाहूंते अधिकाईहै । फूललेत करतेबिछुरि छतियामें अटैछूटै छतियांते फटै बसन बनाईहै॥ खंडत

अधर भौंर जपाके कुसुम जानि करातकित होतगात जातछेद छाईहै। ननँद जेठानी ठकुरानीबनी बैठी रहै मोहिंको न देखिदेहि मोहींको पठाईहै १ पुहुपकी बाटिकामें गईती पुहुपलेन बानरकठिन एकदौरिके लपटिगो। नखन बिदारी सारी फारीमेरी मलमल की कीन्ही मैंपुकारतब कुंजन झपटिगो॥ भागिकै मरिकै मैं इहांलौंआई शिवनाथ धरकतिहै छातीरंग मुखको कपटिगो। श्वासभरिआई पियराई मुखछाई दौरिगेह तकआई परस्वेद में चपटिगो २ आलीमैं गईहैं आजु भूलि बरसाने कहूं तापर तुपै पदमाकर तनैनो क्यों। ब्रजबनिताबे बनितानपै रचैहैं फाग तिनमें जोऊधमिनि राधामृग नैनीयों॥ घोरिडारी केसरि सुबेसरिबिलोरि डारीबोरिडारीचूनरि चुचाति रंगनैनीज्यों। मोहिंझकझोरिडारीकंचुकी मरोरिडारी तोरिडारी कसनि बिथोरिडारी बेनीत्यों ३ सासुमोहिं त्रासदैपठायोहै प्रसून लेन कौतुक तहांको तोहिं सगरो सुनाइहौं। फाटपट केवरेके कंटक अटकि काटे भौंरनके ठौरठौर रहीछत छाइहौं॥ कहै गिरिधारी कितै आइकै अकेली कहा आपने शरीरनकोसांसति कराइहौं। मेरीबीर बीरकी दोहाई भूलिआई आजु आजुते नगीचे याबगीचेके न आइहौं४॥ अथवचनविदग्धा॥दोहा॥ कहतविदग्धाभांतिद्वै जे कविसुमतिसुजान। बचनविदग्धा एकअरु क्रियाविदग्धाआन॥ कवित्त॥ आजुहौं कहांते उतनाहक नहानगई हानिभई तातेतहांसहाभय भीजिये। कहैगिरिधारी

बनमांझ होतआवै सांझ साथ ना सहेली हैं अकेली हाथमींजिये॥ मैयामोहिं मारीभैया भवनते निकारी पैयापरत कन्हैया मेरो कहोकाम कीजिये। भूलिकहूं कालिन्द्री के कूलमें हेरानो आयलाल मेरे छलाकोहेराय नेक दीजिये १ आजुदीपमालिकाको पूजनगईहै सबरैनि अँधियारीहैं अकेली कहा कीजिये। प्रेतऔ पिशाचनकी नारीडोलैं घरघर धरक करेजेहोत तातें भय भीजिये॥ श्यामहिं सुनायकै कहतगोपी बारबार दीपक बुझानी मैनताने सरकोजिये। जौलौं घरहाई आवै मन्दिर लौं हाहा तौलौं आवरी परोसिन बलाय तेरी लीजिये २ आईहै निपट सांझ गैयागई बनमांझ ह्वांते दौरिआई मेरोकहो कान्ह कीजिये। मैंतोहौंअकेली औरदूसरोन देखियतबनकी अँध्यारीमें अधिक भय भीजिये॥ कबि मतिराम मनमोहनसों पुनिपुनि राधिका कहत बात सांची ये पतीजिये। कबकी हौं हेरति न हेरेहरिपावतिहौं बछराहेरानोसो हेरायनेक दीजिये ३ औघट कालिन्द्री के कदम्बनके वृन्द जहां बिपुल बयारि हरिआवनेन पावती। कारेकारेपथिक भिहावन करारे भारे शोभा सूर कीरन जहां न काढ़ि आवती॥ कहत परोसिनसों बचन सुनाय श्यामै चातुरीसों आपनो मिलनदरशावती। ऐसेठौरगईगैयाघरमें न मैयादैयामैया मोहिं मारि मारिढूंढन पठावती४॥ अथ क्रियाबिदग्धा॥ दोहा॥ करै बचन सों चातुरी बचन बिदग्धा होय।करैक्रियासों चातुरी क्रियाबिदग्धासोय॥ कबित॥

मंजुल निकुंजनमें मंजुल महलमध्य मोतिनकी झालरें किनारिनमें कुरवृन्द। आयगेतहांई पद्माकर पियारे कान्ह आनि जुरिगये त्यों चवाइनके नीके वृन्द॥ बैठी फिरि पूतरी अनूतरी फिरंग कैसी पीठदै प्रवीनी दृगदृगनमिले अनंद। आछेअवलोकिरहीआदरश मंदिर में इन्दीवर सुंदर गोविंदको मुखारवृन्द १ रात चांदनी मेंबैठी चांदनी बिछौनाकरि आसपास मंडलसहेलिनके वृन्दको। ताही समय आये तहां कुंजते सोहाये श्याम चारु चतुराईके पसारि फरफंद को। कहैगिरिधारी अति सुंदर तमाल छबि बालको दिखायो लालमंदिर अनंदको॥ सखिनभुराय यदुरायको उतरुदियो प्यारी नीलपटसों चोराय मुखचंदको २ बासरनबीतें नैनाभरि भरि रीतें प्यारी चढै न अँटारीऔकढै ना पाउँगेहते। भणत कबिन्द्र कैसेदेखै दुरिसांवरेको झांवरेबदनहोत देखेबिन देहते॥ खिरकी न दीन्हीताकी पियासुधि कीन्ही तिया अति परबीनी कीनी छलबल छेहते। कुंजी कुंज मंदिरकी पतिहि देखाय राखै कुलुफडराय यदुरायके सनेहते ३ बाईजगिआई कबिराज छाती भरीआईपीरिपरिआईऔनिकसिआई पासुरी। सखि कैरकतगये। पाइयेरतीको कहूं जीको। परोभारहोसां सोहैनसांसुरो॥ कौनयह पीरपावै काहूसोंनहींजनावै सगासगा कहूकआवैहूंधतउसासुरी। आननकी ओट किये आननसोंबातेंकरै काननकी ओरकिये कानसुनै बांसुरी ४॥ अथलक्षिता॥दोहा॥ प्रीतिकरै जो मीतसों स-

खियांलखै लखाय। ताहि कहतहै लक्षिता जेप्रबीण कबिराय॥ कवित्त॥ तेरेक्यों छपाये छपै छापेदार अंगियामें अतर गुलाबीजो लगायो रंगबागको। रदछद ऊपर दरद शरहदयेरी रदकीरसके कौन लग्यो रद भागको॥ बातव निआई प्यारे भीजत बचाई प्रीति प्रकटी स्वहाई सुखपायोनेह लागको। लालकी कुसुम्भी लालपाग दागवारी वहै सखीकहे देतहै किशोरी अनुरागको १ भूल्यो गृहकाज लोकलाजमन मोहनी को भूल्यो मनमोहनको मुरलीबजाइबो। अबही दिन द्वैमें रसखान बातफैलिजैहै सजनी कहांलौं चंद्रहाथन दुराइबो॥ कालिहतौ कलिन्द्री तीर चितयो अचान कहीदोउनको दोऊओर मुरिमुसकाइबो। दोऊपरें पैयादोऊ लेतहै बलैया उन्हें भूलिगई गैया उन्हें गागरी उठाइबो २ अबहीं अकेली कहीआवत निकुंजनते आनँदसकेलि केल किये मनभायेते। कहैगिरिधारी जानीसगरी सयानी हम अंगअंग अच्छतन खच्छत न छायेते।नेह नन्दनन्दनको मूदेहूनमूदहोत छपत छपाकर न हाथनछपायेते॥ जुरतिनडीठिहै सुरति सुकरति कहासुरतितुरत कौन दुरति दुरायेते ३ मोसोंतूदुरावति है काहेको सयानी करितुरति की सुरतिनछपतछपायेते। कंचुकी कसनिटूटीनखछतछाजतहै ओठनमेंरद औपलक पीकलायेते॥ माधव कहत टूटेहार औअल कखुलीपलकनछाई अलसाईहैजगायेते। भरतउसासर ही नैननवाय रही मनसकुचायरही लाजनलजायेते४

अथकुलटा दोहा ॥ जोअनेक नायक चहै नायकसों है चैन। कुलटा तासों कहतहैं सजैरैंन दिनसैन ॥ कबित्त॥ चंचल दृग अंचल चलावत चलत चाल अंचल उघारिकै है वंचल सधीकरैं। यौवनके मदरूपमद मतवारीभई घूमति भुकति युवाजनसों हसीकरैं॥ कहै गिरिधारी वह कौतुक कह्योन जात कंकरीके लागत सिकारी नाकसी करैं। डोलति बजारन बजारन फिरति बाल हेरनमें जारन हजारन बशी करैं १ छिनुक द्वारे छिन आवत ओसारेछिनचौवारे नैनसैनन सजतहै। और गहनेन के गहँक को गनावै जाकी आठहु पहर सुद्रघंटिका बजत है ॥ उपपति मंडली के मंडल की मंडति सुरतिके घमंडनिते नेकुनाजरतिहै। मैनमदछाकीरीति दोषेकारिजाकी केती सासहू सजा कीपै कजाकी ना तर्जतिहै २ यौवन नवेली अलवेली रूपमानभरी हँसत गवेली गोप ग्वालन सों जायकै। एकन बुलावै एक सैनन चलावै एक नैनन रिझावैरएकरहै उर लायकै॥ हेरत चलतअंग कोरन कटाक्षकरि अंचल उघारि दीन्हीलट लटकायकै। बागनवीलवील जातना सखीहूसंग लोकलाज डारि कुल कानि विसरायकै ३ फेरत अनोट पीछे हेरत तिरीछे बाल गैलमें करत फैल छैलको दिखायकै॥ बात कहिबे के मिस सजनी कोठाढी करै रजनी मिलाप को ठकानो ठहरायकै॥ भनत कबींद्र साहुनँद के आगे ऐसीसूधी ह्वै रहत मानोरूधाहै उपायकै। नैननके डोरेबांधियो

बनके जोरे मनलेत है मरोरे कुचकोरे दरशायकै ४ अथ मुदिता ॥ दो० ॥ मुदितहोयजो देखिकै सुनिचित भावति बात। मुदितातासोंकहतहैं जेकबिमतिअवदात ॥ कवित ॥ तरवंशीवटके कलिंन्दीके निकट मनमोहनीखबरिपाई नन्दकेनँदनकी । सांझसमययमुनामें दीपकप्रकाशनको शासन लयकोदियो सासुयों सदनकी ॥ कहैगिरिधारी सुनिबातईसि फूलेगात बरबिानजातयह महिमामदन की । अँगिया दरकिगईछतिया फरकिगईतियाकोसरकिसरफूंदी अंगदनकी१सासुरेकी मालिनि अभीसकै सुहागभागपहिरायो चौंसरत्रबेलीकोउनतही । रावरे महल परोस कोस द्योसबीते वाकेमोहिंफूलन चुनावति चुनतही ॥ सुचित सकेतमैं निकेतके निकटसर मानोसुख वृंदमन्द सुनमि सुनतही । माइकेकी बिरह की जरदी रहीकेमुख लालोचढ़ी बालके खुसालीके सुनतही २ वृन्दाबन बीथिन बिलोकि न गईहैजहां राजतरसालवन तालरू तमालको । कहैपदमाकर निहारतबनोईतहां नेहनको नेमप्रेम अदभुत ख्यालको ॥ दूनोदूनो बाढ़त सुपनोकी निशामें अहोआनंद अनूपरूप काह ब्रजबालको । कुंजते कहूंको सुनो कंतको गवन लखि आगमन तैसो मन हरन गोपालको ३ नाह परदेश ताके ढिगजाइबेके काज साईति शोधाय शुभ पण्डित बोलायकै। सुन्दर नक्षत्र बरयोगओकरन तिथि चन्द्रजानि सासुहै सुमंगल सजायकै॥ माधवकहत चलीगेह ते कछुकदूरि आयामिलो कंतजो बिदेश रहे

छायकै। मनमें मुदित भई लौटिनिज धाम गई हियरे हरषिउर आनँद बढ़ायकै ४ अथअनुसयना॥ दो०॥ मिटो विलोक केलिथल पियसों जहां मिलाप। अनुसयना तासों कहत होय हिये सन्ताप॥ कवित्त॥ गुंजत मधुप बैठ मालती लतान पर बेला की सुगंध बहै परस समीर की। डहडहीबेलीवन फैली फूलबरषत लहलहीलहरि वायमुनाके नीरकी॥ सुमिरि सकेत कुंज नयनन प्रवाह बाढ्यो सखी समुझावै नेक धरत न धीर की। आईहै बसंत ऋतु कोकिल कलापी पापी बोलत पपीहा कै धैं मैन उपचीर की १ सूने घर परस परोसी के सुजान तिय आई सुनि सुनिकै परोसिन मनो अराति। कहै पदमाकर सु कंचन लतासी लचि ऊंची लेति सांस वा हियेमें त्यों नहीं समाति॥ आय आय जहांतहां बैठि उठि जैसे तैसे दिनतो बितायो बधू बीतति है कैसे राति। ताप सरसानी देखै अति अकुलानी जऊ पति उरआनी तऊ सेजपै बिलानी जाति २ आई ऋतु पावस अकाश आठो दिशन में सोहत स्वरूप जलधारन को भीरको। मतिराम सुकवि कदम्बन की बास युत सरस बढ़ावै रस परस समीर को॥ भौन सों निकसि वृषभानकी कुमारी देख्यो ता समै सहेटको निकुंज गिरो तीरको। नागरि के नैननमें नीरको प्रवाह बढ्यो देखत प्रवाह बढ्यो यमुना के नीर को ३ भयो पतिझार पतिझार में उघरि गयो हतो जौन केलि कुंज कालिंदी किनारा मैं। कहै गिरिधारी ताहि

देखत बिहाल भई बाल यहरानी मुकताहल ज्यों थारा
में ॥ छीटवारी कंचुकी कलित कुच कोरन में लोचन
ते आंसू गिरे उपमा बिचारा में । ओढ़े मेघ डम्बर बघ-
म्बर अनूप मानो शम्भु के स्वरूप है नहात छिन्नधारा
में ४ ॥ अथ गणिका ॥ गणिका तासों कहतहैं जासों धन
सोंप्रीति । नृत्य गीत रतिकी कलानि कलति कोककी
रीति ॥ कवित्त ॥ पै जार जरी की इजार पैन्है ओढ़े
पटनायक हजारमें बजारमें खड़ाईहै । कहै गिरिधारी
मृदुहसनबिलासनसोंआसनसों कौनबसहोतरसकाईहै ॥
रीझिरीझिदैदैधन धनीनिरधनीभये तहांजरजातिजहां
सम्पतिसवाईहै । क्योंनयाके चलोआवैकंचनउलीचोपा
हिकंचनकचरिविधि कंचनोबनाईहै १ सोहनीललित
देशी गूजरी सुघरबनी सारीसुवासारी जरीपूरबी कि-
नारीहै । सिंदुरासोगमनबहारप्रति अंगनमें सारगसीकू
कति बिलोकि मेघवारीहै ॥ पूरिआये नैननीर आ-
नँदको सिंधुमानें देखि नटनागरीको महाछबि भारी
है । ईमन धरेहै हट निपट धनासिरीको ललमाल वा-
कोत्तियापियापै सिधारीहै २ लाललाल पांयनमेंकौसै
जरकसी लसीहैसमाल लीबेको बहार जाके जीपैहै ।
घेरदार पाइचेंई जार कमखावतातें पैन्हि पीत कुरती
रतीको रूप लीपैहै ॥ ग्वालकबि उरजउतंगनपै आंगी
तंग ओढ़नी सुरंगझुकी आंवै सरसीपैहै । सोनेकीसि-
रीसी बिजुरीसी निसरीसी वह चंदते चिरीसी दीसी
बैठी कुरसी पैहै ३ आरससों आरत सँभारत न शीश

पट गजब गुजारत गरीबनकी धारपर । कहै पद-
माकर सुगंध सरसार वैसे बिथुरी बिराजैं बार हीरन
के हारपर ॥ छाजत छबीले छितिछहरि छराकी छोर
भोर उठिआई केलि मन्दिरके द्वारपर। एकपग भीतर
सुएक देहरी पैधरै एककर कंजएककरहै किवाँरपर४
अथअन्यासम्भोगदुःखिता ॥ दो० ॥ आनतियातनपियाके रति
केलसगालेषि। अन्यसुरतिसोंदुःखितावरणतसुकविनि
शेषि ॥ कबित्त ॥ याही को पठाई बड़ोकाम करिआई
बड़ीतेरीहै बड़ाईलखो लोचन लजीलेसो। सांचीक्यों न
कहै कछुमोको किधौं आपहीको पाई बकसीसलाई
बसन छबीलेसो ॥ मतिराम सुकबि संदेशो उनमा-
नियतुतेरे नखशिख अंग हरष कटीलेसो । तूतोहै र-
सीली रस बातन बनाय जानै मेरेजान आईरस राखि
कै रसीलेसों १ बोलतन काहे येरी पूछेबिन बोलो
कहा पूंछतहो काहेभई स्वेद अधिकाई है। कहै पद-
माकर सो मारगके गये आये सांची कहमोसों आजु
कहांगई आईहै ॥ गईआईहो तो पास सांवरे के कौन
काज तेरेलिये ल्यावनसो तेरीये दोहाई है। काहेते न
लाई फिर मोहन बिहारीजूको कैसे वाहि ल्याऊं जैसे
वाको मनल्याईहै २ कमल बदन कुंभिलानो काहे श्रम
बिंदु ग्रीषम दुपहरीतपन सरसाईहै ॥ पीतपट कैसोतेरे
कंतबकसीस दीन्ही धीरेक्यों बचन मोहिं मोहनबका-
ईहै। बारक्यों लगीरी तेरे प्रेमकी कहानी कही अ-
रुन कपोल काहे केशरि लगाई है ॥ भूषण अभंगका

हेदौरिकै संदेश लाई श्यामतनभाई आली आली दुख पाईहै ३ येरीदूती कहामेरी ओरते तू गईहुती मेरोयों न भई भई आपनेई काजकी। कहैगिरिधारीकत करत दुराव नहीं दुरत दुराये द्युति सुरति समाज की ॥ मेरे ज्ञान केलिकरिआईहै कन्हाईजूसों लाईहैहजारनकी मौजशिरताजकी । सारी जरकसी कसी अँगिया कि नारीदार बकसी विशद बकसीस ब्रजराजकी ४ ॥ अथप्रेमगर्विता ॥ दोहा ॥ जोतियपियके प्रेमको जाहिर करै गुमान । प्रेम गर्बिता होयसो बरणतसुकबि सुजान ॥ कबित्त ॥ मेरेहँसे हँसतहै मेरे बोले बोलत है मोहींको जानत तनमन धन प्रानरी । कबि मतिराम भौंह टेढी किहे हाँसिहू में छोड़िदेत बसन भुखरण पानी पान री ॥ मोते प्रानप्यारी केन औरकोऊ कहातोसोंरिस करि कतिकहु कहाको सयानरी । मैन कामिनी के मैनकाहूके न रूपरीझै काहू के सिखायोसखि आनो मन मानरी १ जोहूमैं कहत सोई करत प्रमान पिय वाकी डीठि मेरेसंग लागिसी फिरतिहै । मेरेहँसेहँसत उदासते उदासहोत नेकहूँसिरहै पानीपानना सोहात है ॥ कौन गुनरीझे मैंनजानो कछूरसभाव कैधौं मेरे भागकी बड़ाई ठहरातहै । कुमलयों बार बार घूंघुट उघारि देखै चंद्रज्यों चकोरनको मन ललचात है २ मेरेहै रहत नित मोहींको चहत चित्त औरयेही तूनसों नहित हित्तवर्ततिहै । कहै गिरिधारी अनरसहूमें रसहूमें केसहून तहँ रसरीति रितवर्ततिहै ॥ मेरी मुसक्यानचारु

चंद्रिकाको पानकरि आनँद बिनोदके बिलास बित वतिहै। छोड़त न रैनिदिन मेरेमुख चंद्रओर पीतम के चयन चकोर चितवतिहै ३ मेरोपति मेरे पी अधीन निशिदिन रहै मेरीओर देखिनित मन हरषतहै। मेरी प्रीति रीतिकी कहानीकहै लोगनसें मोहिंछाड़ि दू-सरी न नायका चहतहै॥ माधव कहत मोसें कोककी कलानकरि मोद उपजावत रिझावत रहतहै। जैसी भाग मेरीतैसी औरकी न हेरीब्रज बनिताघनेरीभाग मालिनी कहतहै ४॥ अथरूपगर्विता॥ दोहा॥ आपुइअपने रूपकी जोतिय करै बखान। रूपगर्विता कहतहैंजाके रूप गुमान॥ कवित्त॥चंद अरबिंद बिम्ब बिद्रुम फणिन्द शुक कुंदन गयंद कुंदकली निदरति है। चम्पा सम्पा सम्पुट कदलि घनश्याम कहा कुमकुमकोअंग-राग अंगन करति है॥ कोकिल कपोत पिक पल्लव कलिंदीघन दरके निरखि दास्यो छतियां बरति है। मेरे इन अंगनकी नकल बनाई बिधि नकल बिलोके मोहिं नकल परतिहै १ चंद्रमुख अधर निरखि हीरा दंतनको सीपहि निदरिसान मुकता प्रकासेहै। बारन से बार चक अरुझक कंजखंज शुकआदि नासिकाते रहत उदासेहै॥ मेरेसब अंगनकी समता न पाई तासें कहै परसाद सबै दुखके प्रकासे हैं। कोऊ नभवासी कोऊ भयेथलवासी जायकोऊ बनवासी कोऊ जल में निवासेहैं २ बैठीहुती जाय दुरि दीपन में आयो तहां जाहितू कहो करति बीर हलधरको। भागीहैं डेराय

करि भवन अंधेरे लखि निपट छवानकाम्ह आनिगहो करको ॥ दीपति हमारी या हमारे साथकीन्हो छल दीन्हो जो बताय यहभेव घरघरको । दौरि दुरिबे के काज दीपक बुझायो सोतो गाहक भयोरी येरीआप नेई गरको ३ उत्तर घनेरे करिरहो रुख फेरे तिहूं घन ष्यामघेरे घरघरिहू घरीरहै । कहैगिरिधारी मूंदरहो मुखचंद चारु तापर चकोरनकी चार्चारि खरीरहै ॥ गातनमें कबहूं सुवासना लगाईतहूं आसपास अलिन कीअवलिअरीरहै । रैनिदिन अंगनकी दीपतिदिपति नेक छिपति छिपायेते न बिपति परीरहै ४ ॥ अर्थमान वतो ॥ दोहा ॥ करैईरषा दोयसें जोनायकसोमान । मान वतीतासें कहतजेकबि सुमति सुजान ॥ कबित्त ॥ मेखी ह्वै रहीहै सो वृषभ गतितेरी आली मिथुनके काज को बिलम्ब कहाकीजिये । करक मिटाउ आछे सिंह के चरनधाउ कन्याके सुभाउसो बिशेषितजिदीजिये ॥ तुलातौअतुलरूप वृश्चिककोबिषछाड़ि घनघनष्याम जूके चरन गहीजिये । मकर न कीजै आछे कुम्भ के शुननह्वैकै मीनमन मगनहोकै प्रेमरस पीजियेश्तौलों हौंनबोलो जौलों चातक मयूर बोलै मानके मरोरनैन कोरहन खोलीमैं । खबिरही खूबी खसबोयकी लहर दार शीतल समीर डोलै तनक न डोली मैं ॥ कहत नेवाज मैनमन में उमगि आयो फूलिउठे उरजउतंगयुग चोलीमैं । कूकिउठी कोयल कसायनकहूं ते ष्याम देखि घनष्याम घनष्याम तोसें बोलीमैं २ येरीगोप-

ज्यातसीहै न गोपजाया गोपजातिक्योंछिपाया गोप जातिकीजै भंगना। हूजै गोपजाति क्यों न हूजै गोप जातिक्यों न हूजै गोपजाति गोपजाति लीन्हे संगना॥ मेटेगोप जाति तनभेटे गोपजाति उरफेटे गोपजातिधन सिंह यामें ढंगना। नेखीतू अनंगना जू चाहैदेवअंगना सो ठाढ़ीतेरे अंगनायैं तेरे एकौअंगना ३ आयोहैसयान पन गयो न अयानतऊ नितउठि मान करिबेकी टेउ पकरी। घरघर माननीय मानतीमनायेतेवे तेरी ऐसी रीति सोतो काहूमें न जकरी॥ कविमतिराम श्याम रूप घनश्यामलाल तेरेनैनकोरओर चाहै यकटकरी। हहाकै निहोरेहून मानती हरीननैनी काहेको करतहठ हारिलकी लकरी४॥अथपुरुषबियोग॥ कबित्त॥गाइहौं मलारै औजनाइहौं हियेमेंछकि छाइहौंछिगुनीकुंज कुंजहीके कोरेमैं। कहैपदमाकर पियाइहौं पिआलामुख मुखसो मिलाय हौं सुगन्ध के झकोरेमैं॥ नेह सरसाइहौंसि- खाइहौं जोसावनमें पायहौं परोसों सुखमैनके मरोरेमैं। उरउरभायहौं हियेसों हियलाइहौं झुलायहौं कबैधौं प्राणप्यारीको हिंडोरेमैं १ राधेकी रहनि दुनिदहनि दहीहै देह नेहकैसे निरद नयन नीर बरसत। सांवरी सी मूरतिमें कांवरीसी परिगई तांवरीसी आय तहां श्रमबुंद बरसत॥ श्वासन ते बाड़वकी ज्वालसी जरन लागी झरपि झरपिझूमि दांवरीसी झरसत। आंखें खोलिबोलिकह्यो ऊधाजू तिहारीसोंह मेरोब्रजचलि- बेको अंगअंग तरसत २ गायबे बजायबेकी चरचा

चलावै कौन छोटेछोटे छोहरन खेलबो बिसरिगो । सबपुरबासी गहे रहत उदासी खोजहांसीको सबनके मुखनसों हेरायगो ॥ सबहीके सुखकोदैवैया महिपाल सो शकुंतलाके शोचके समुद्रमें समायगो । नारि औ पुरुषमिलि सबही बिसारयोसुख सगरे नगरमेंनिगोड़ो दुख छायगो ३ कुंजघनी घनसे निकसि दामिनीसी बाम कुटिलकटाक्षनसों रीतोतनकैगई । मेरेहिय भूमि प्रेम सलिल समोयकरि इन्दीवरनैनी बीज बिरहकेबै गई ॥ सुधि बुधिगई तनबिसरों बगरिगयो दुखन की ओट गिरधर मेरेदैगई । जानत नकोहै कौनकीहैकहा नाम वाको डारिकै ठगोरी मन मेरो हरिलैगई ४ ॥ अथ पुरुषमान ॥ कबित्त ॥ नंदलाल जादिन सों रास करिगये मोसों तादिनसों होसकरि आवैयहिटोलैना । कहैगिरि-धारी कबौं कुंजकी गलीमेंजाय मुरली बजाय गीत गावत अमोलै ना ॥ येठोई अटानसों अरेठोइ रहत आली करत सनेहकी कलानकी कलोलैना । रहैअन बोलै भेदमनको न खोलै महामान भरो डोलै हाय मोसों हँसि बोलैना १ मानकरि बैठे बनमाली बिन काज आज ऐसीकछू चूक सखीमोपैतो परीनहीं । कोटिन उपाय करि बिनती अनेकभांति राति सबगई मेरी एकतो सुनीनहीं ॥ माधव कहत कौन करिये उपाय आली दीजिये बताय अबएक तो चलीनहीं । पैयां परों बीरमैं बलैयालेबो तेरीचलो लाइये मनाय मनधीरतें धरैनहीं २ अबला अधीर बुधि कहाजानै

रसभाव तुमसी सुजान ऐसोमान धरियतुहै। ऐसोबोल बोलो जैसो बोलियतु बलिजाउंखेदेकहूं पसिनकोपाछे परियतुहै॥ कीजै सनमान अरु खैयेपान प्रानप्यारे बिना जलयान कैसे सिंधुतरियतुहै। जाकोलिये मोसो हाहा करिकै परतपाँय तासों हरि अनरसकी बात करियतुहै ३ खेलत हँसत पतिपतिनी सुसेजपर अति रसबस भये आपसमें बाढ़िकै। बातहीके मध्यकछु बाल अपमान कीन्हो लालरिसिवाय करवटलीन्ही डाढ़िकै॥ प्यारी परबीन तबऐसी चतुराईकरी छाती सों लगाय पीठिकसी अतिगाढ़िकै। श्रीफल सुफल बिबि तोंबरीके भायकुच पियहिय रसकी कसक लीन्ही काढ़िकै ४॥ अथदानवर्णन॥कबित्त॥ सम्पतिसुमेरुकी कुबेरकी जोपावै ताहि तुरत लुटावत बिलम्ब उरधारैना। कहे पदमाकरसो हेमहे हस्तिनके हलकाहजारनके बितरबिचारैना॥ गंज गजबकस महीपरघुनाथ रावयाहीगज धोखेकहूं याहूदेडारैना। याहीतेगिरिजागजाननको गोयरही गिरितेअरेतेनिजगोदतेउतारैना १ कछुदिन बीते अब बासर रहैगोअना चकही बियोग के बिखाद नारखतहै। रहैगो संयोग रोज रोज यहि भाँतिन सों छपोछप जैहै छिनछिन परखतहै॥ राजन के राज महाराज श्रीहिकैतराय करनसो जाकेहेम धारबरखतहैं। बारीसुरसाखीदानरीतिदेखिजाकी मेरु रहैगो न बाको चकवाकोहरखतहै २ कासीसोंनबास रामदूतसों न दास कालत्रासंसों न त्रास न सुपंथ संतसा-

थसों । हंससों न ह्वान हंस बंशसों न बंशग्रान अन्नसों न दान हालहुकुमी न हाथसों॥सिंहसों न रनी श्रीकुबेर सों न धनीधौल मेरुसों ढुनीहै न उत्तमाङ्ग माथसों। पानीगंगपाथसों न ज्ञानी गौरिनाथसों न मानी दशमाथसों न दानी बिश्वनाथसों ३ बकसि बितुगड दीन्हे भुगडनके भुगडनृप मुगडनकी मालय त्यों दईहै त्रिपुरारीको। ग्रामदीन्हे धामदीन्हे उदक अरामदीन्हे घोड़श न दानअ्रतीके जीवधारीको॥कहैपदमाकर करोरिनके कोशदीन्हे भीतिन भरोशदीन्हे ऐसो उपकारीको । राजाजैसिंहने दईनादोयबातें एक शत्रुनको पीठि और दीठि परनारीको ४॥ अथयशवर्णानम्॥ कवित ॥ कैरवसों कुन्दसों कपूरसों कलानिधिसों कागदसों काससों कपाससों निहारीहै । फाबिरही फटिकसों फेनुसों फोहारासम उज्ज्वल तुषारासम तारासम तारीहै ॥ हीरा हर गिरहंस हारसो चमेलीसम चांदीसम चटक चहूंधा चारुभारीहै । मोतीसम क्षीरसम बीरराजा रामचन्द्र फैली महिमगडलमें कीरति तिहारीहै १ घोरे सेत सेत जोरे रथसो दुगध सोहै ध्वजा फहरात ज्यों प्रवाह गंगपाथको । बिमल कलानिधिसों बैठो अवलोकिभयो बिसमै कहाते पातरपनके साथको ॥ पूछो अज वेश तुमकोहो कितजैहो उन टेरिके सुनायो बड़ो बचन सनाथको । क्षीरधिते आवत छपाकरके पासजात हौंतौ मैं सुयशबीर बाबूविश्वनाथको २ पूजाकी समय में एक कौतुक लखेउँ जुआज सुनो जैसिंह सब सुखन

को हेतहै। गुचिसें सुचित्त ह्वैके पज्यो ब्रजराजै प्रभुदेख्यो पक्षिराजै चलि जैबेको निकेतहै ॥ ताहीसमय रावरेको सुयश सुनायो कहूं भयो श्यामतन सेत बसन समेतहै। झझकि झझकि ताहि देखि देखि हालय देखो गरुड़ गोपालय आजु चढन न देतहैं ३ इन्द्रिन ज्यों हेरत फिरत गज इन्द्र अरु इन्द्रको दनुज हेरै दिगप नदीशको। भूयश भनत सुरसरिता को हंस हेरै विधिहेरै हंसको चकोर रजनीशको ॥ साहितनै सरजायों करनी करीहैजामें होतहै अचंभो कोटि देवयो तेतीसको। पावत न हेरेतेरे यशमें हेराने निज गिरिकोगिरीशढूंढै गिरिजागिरीशको४॥अथसूमवर्णनम् कवित्त ॥ दर्दरो देखतकै दिलको दरद हरै देबेकोहजार लोग लाखनको टारोतो। गर्जीबदारै सरदारै दारैसौंपिदेतो दुगुन करै को सकै ब्याजते बिचारोतो॥ सुकवि सुबंश कहै सूमकहै मौमिसों आजुबड़ो स्वप्नमें कलंक उरधारो तो। आगिसी लगीथीभागिगहतीबाल बचनकी जागि ना परोतो मैं रुपैया देयडारो तो १ आंधेदारकाकरी चतुरचित्त काकरी सो उमिरिवृथा करी न रामकी कथाकरी। पापकी पिनाकरी न जानै नाक नाकरी सोहारिल की नाकरी निरंतहीननाकरी ॥ ऐसी समता करी न कोऊ समताकरीसो बेनीकविताकरी प्रकाशता सुताकरी।देवअर्चा करी न ज्ञान चर्चाकरी न दीनपै दयाकरी न बापकी गयाकरी २ जाकीहै अधेलो चारिपावलो दुवन्नीआठ नामेंपुनिदे-

खे आना सोरह लखातहै। बत्तिस अधन्नी जाकीचौं-
सठ पवन्नी ताकी सकसै अठाइस जामें धेला सरसात
है॥ इकरा बिचारो हैसैछप्पन सुदेशयेजू पांचसै सु-
बाराजामें दमरी लखातहै। सबते कठिनहै या बापते
पियारो भैया रूपेको रुपैया देया कापै दयोजातहै ३
पढ़नन देतहै कबित्त बाजे भावन जू बाजे चुपचाप
सुनि नींबसी अचै रहै॥ बाजे दशबीस बूढ पूछि दि
ष्ट कूटकन मूढ़शठ साखिन के चरचा मचै रहै। बाजे
अफ सोसकरै बाजे राहिबोसभरै बाजेदे भरोस दरबार
में नचैरहै। बाजेसुम सूकादेत पाथर लगाय छाती बाजे
समसाहेब सुपारियों पचैरहै ४॥ अथकृपाण वर्णनम् ॥ ह
रिचक्र बेली शिवशूलकी सहेली कैधों कैधौं अलबे-
ली है नवेली महाकाल की। कैधौं बलदेवकी मुसाल
कीहै मौसी कैधों माताहै प्रचण्ड कालदण्ड बिक-
रालकी॥ भृगुके कुठारते कठोरो उतनेही कैधों बिषकी
बहिन कैधौंकैधौं बज्रबालकी। हरदृग ज्वाल प्रलय-
कालकी करालकैधौंकैधौंकरवाल रामचंद्र महिपाल
को १ रन बनभूमैतो भुजलतिकापै चढ़ी कढ़ीम्यान
बामीते बिषम बिषभरीहै। जारिपुकोडसै सोतो तजै
प्राण ताहीसण गाडुलो अनेक हारे झारे नाहिं झरी
है॥ भनत कबिंद्रराव बुद्ध अनिरुद्ध तनै युद्धबीच या
को सक तोहीं बसिकरीहै। तरल तिहारी तरवारप-
न्नगीको कहूंतंत्रहै न मंत्रहै न यन्त्रहै नजरीहै २ कैला
कालकूटकी तचाईतेजबाड़वकी शेषफूंक धवानिप्र-

चण्डताइ चढ़ीहै ॥ आईआसमानतें कि पाई सानभा समान प्रलयकी बुझाई पानीपैंनधारकढ़ीहै। हरिहर हरके त्रिशूल हरिचक्रहू तें बैरीबंश बांधबेकी भलीवि धिपढ़ीहै ॥ अबदुल वाहिदके नबीखां तिहारीतेग बज्र के हथौरा काल कारीगर गढ़ीहै ३ दाहन ते दूनीतेग तिगुनी त्रिशूलहूते चिरिन ते चौगुन चलांक चक्रचा ली ते। कहैपदमाकर महीप रघुनाथ राव ऐसी शम शेरशेर शत्रुन पैघालीते ॥ पांचगुनी पविते पचीसगु- नी पावकतें प्रबल पचास गुनी प्रलय पर नालीते । शतगुनी सांपनसहस गुनी आपनते लाखगुनी कालते करोरि गुनी कालीते ४॥ अथमरस्या ॥ खसिगयोशा- न को निशान बैसवारे बीच आजुरथ बैधि सुरलोक की पथैगयो । कहै शिवलाल समुझावै कौन बानी कहि दूनों महरानिनको जनम वृथैगयो ॥ बाबूहरी सिंहतें सिधारे देवलोक तेंहिशोक सुखभागिकै पुरा नकी कथैगयो ॥ भसिलयो कालहिज गैयन को रस पाल भैयन को कलबन भानुसों अथैगयो १ सुकबिच कोरन कोचंद्रमा हेरान्योकै सिरान्योभानु सुकृतसरो जनके खानको ॥ खसिपर्यो साधुनकी सीमकोसदन कैधौंसागर सुखान्यो सुखशीलता सुधानको । भनतक बींद्र भूपखींची भगिवंत जूझ्यो बैरबांधिबूझै कोतली का तुरकानको ॥ खूटिगयो खग्गन के ख्यालकोअ खारो कैधौं उखर्यो अखैवट अखिल हिंदुवान को २ समुद सुखान्यो कैधौं संतजन मीनन को दीननको देव

दरखत सो उखरिगो। पुराय के प्रकाश को अकाश शशि क्षीणभयो फैलिगो प्रकाशतेज तमपुञ्जभरिगो॥ लीन्होबिश्राम बिश्वनाथ रामधाम आजु सुकृतको भांड़ाभूरिभूतलते टरिगो। टरिगो गुनीजनके गुनको गुमानहाय आजु गुनगाहक जहानते निकरिगो ३ आजु महादीनन को सूखिगो दयाकोसिंधु आजुहीं गरीबन को सबगथ लूटिगो। आजु द्विजराजन को सकल अकाजभयो आजु महाराजन को धीरज जो छूटिगो॥ सीतलकबिकहै सबयांचक अनाथ आजु आजुहींअनाथनकोकरमजोफूटिगो भूपभगवंतसुरलोकको पयानकीन्हो आजुयांचकन को कलपतरू टूटिगो ४ अथषोड़शऋतुकांत॥ स्वाती हरषाती रसजाती मदसाती हियेकाती सीलगाती टेर बिरही बिघातीकी। जाती लै किराती मनआती न दयाती न चुपाती तालगाती न पिराती उतपातीकी॥ पाती केहू भांती तौ बिसाती जोपैसाती औ धराती सियराती जो व्यथाती ताती छातीकी। न्हाती छतजाती मैंनोचाती रोमपाती काढ़िवाती लै जलाती जीभ कैालिया कुजातीकी १ संगति सखानकी बखानकी न मानकी उमिरिके उठान की सुकौतुक निधानकी। पट्टेफहरानकी दुपट्टे जाफरानकी गहनि धनुबानकी कहनि किंदुपानकी॥ लाली मुखपानकी नरेश के ललानकी प्रभामें उपमान की अवध कुरबानकी। कुंडल के कानकी कमानभौंह तानकी मिठान मुसिक्यानकी अजब एक बान

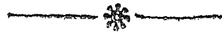
की २ विनगुणा मालवारे अधरन लालवारे तिलकन भालवारे शोभासुख सारेहै। गिरिजात नालवारे मूरति विशालवारे चलन मरालवारे दृगञ्जति धारेहै॥ कारे रंगवारे प्यारे पीलेपटवारे पूछीकहै लटवारे तैंने मोहिं दोह डारेहै। वर परवारे चित्तचोर परवारे हनुमोर परवारे तेरेमोर परवारेहै ३ हारिपै हया न कीन जीवपै मयानकीन दीनपै दया न कीन बापकी गया न कीन। शम्भु अरचा न कीन ज्ञान चरचा न कीन वित्त खरचा न कीन मन फरचा न कीन॥ बारबधू मानकीन मद्यसदा पानकीन मोहमद कानकीन भजन न कानकीन। मीतको न मानकीन हितसब हानकीन हरिको न ध्यानकीनमाधव बखानकीन४॥दोहा॥संग्रह सम्पूरणभई माधवकृतसुखपाय। पंचदेव कीजैकृपा जगतबिदितहवैजाय १ जोकोउयहिग्रंथको पढ़िहैंनर मनलाय। ताहिपुत्रसम्पतिसदा देहैंश्रीरघुराय २ श्री माधवपरसादजू बिरच्योग्रंथपुनीत। संग्रहकियअवलोकिकै विविधकाव्यशुचिगीत ३ भरोसबरस ज्ञानअरु सकलकलागुणभीर। सरलछंदपरबन्धअति पावनप्रियकबिसीर ४ जाकेपढ़तहिं जातकोढ़ मनकेसकलबिकार। फेरिऔरभावैनहींपढ़िबोतासुअधार५ तामेंदईसहायतालिखिबेमेंमनलाय। आद्योपांतसमग्र लिपिभिवरतनलखाय॥ ६ कबित्त॥ लक्ष्मणपुरीसों ायो-जन सुयाम्यदिशि ग्रामएक उत्तम सिसेंडीसुखदाईहै। ताकेमध्य बरणाकार बसत सुजानलोग सोभो राजधा-

नी नरनाहको सुहाईहै ॥ बिरच्यो बिचारिग्रंथ संग्रह करीहै एक माधवप्रसाद पद सरलमें गाईहै । लेखकै सहायता दईहै शिवरतनलाल दुबे वंशजाये मनलाये शिवपाईहै १ ॥

दो० यंत्रालयमुद्रितकियो जगमेंमहतप्रचार ।
होतभयोयाग्रंथको शिवकोकृपाउदार १

इतिश्रीमाधवविलास समाप्तः ॥

मुंशीनवलकिशोरके छापेख़ाने मुक़ाम लखनऊ में छपा
अक्टूबर सन् १८८८ ई०



तुलसीशब्दार्थप्रकाश ॥

गोपालदासजी रचित जिसमें सबपुराणों और षट्शास्त्रोंके मतसे सर्व प्रकारके गूढ़ाशयोंका कथन और जातक-ताजकसामुद्रिककी मुख्यबातें गणित,योग,शास्त्र और विवाह और यात्रादिके मुहूर्त और इसी प्रकार के असंख्य विषयहैं जो पुस्तकके पढ़नेसे जानेजाते हैं ॥

प्रेमरत्न ॥

राजा शिवप्रसाद सितारेहिन्द की दादीरत्नकुँवरि रचितकेवल श्रीकृष्ण और रामचन्द्रजीकी भक्तिपक्षका विषय दोहा चौपाईमें है ॥

चित्रचन्द्रिका ॥

काशीराजकवि रचित जिसमें पहले अनेक छन्दोंमें नायकाभेद वर्णन करके फिर उनको चित्रबद्धकरके रूप दिखायाहै ॥

पीयूषलहरी ॥

पण्डित जगन्नाथजी त्रिशूली कृत-अति मनोहर और पुण्यदायक काव्यमें श्रीगंगाजीकी स्तुति है ॥

गङ्गालहरी ॥

पद्माकर कविकृत जिसमें संस्कृत गंगालहरी से गंगास्तुतिके विषय में जिनसे मनुष्य भवसागर पार उतरे अपूर्व कविताहै ॥

यमुनालहरी ॥

ग्वालकविरचित जिसमें काव्यालंकारयुक्त यमुनाजीकी स्तुति है

जगद्विनोद ॥

पद्माकर कविकृत जिसमें नायकाभेदमें सर्व प्रकारके रसवर्णन किये गयेहैं ऐसी उत्तम सर्व लक्षणयुक्त काव्यकी पुस्तक कोई नहींहै ॥

भारतीभूषण ॥

पण्डित गिरिधरदासरचित छन्दोंके बनाने और नायकाभेद जानने की युक्ति ॥

रसचन्द्रोदय, व रसदृष्टि ॥

उदय नाथ जी व शिवनाथ रचित इसमें सबप्रकारों के नायकाओं का भेद और उनके सर्व प्रकारके अलंकार रचित हैं छापाटैप ॥

भगवद्गीतानवलभाष्यका विज्ञापनपत्र ।

प्रकटहो कि यहपुस्तक श्रीमद्भगवद्गीता सकल निगम पुराण स्मृति सांख्यादि सारभूत परमरहस्यगीताशास्त्रका सर्व्वविद्यानिधान सौशील्य-विनयौदार्य्य सत्यसंगर शौर्य्यादिगुणसम्पन्न नरावतार महानुभाव अर्जुनको परमअधिकारीजानके हृदयजनित मोहनाशार्थ सबप्रकार अपारसंसार निस्तारक भगवद्भक्तिमार्ग दृष्टिगोचरकरायाहै वही उक्त भगवद्गीतावज्रवत्वेदान्त व योगशास्त्रान्तर्गत जिसको कि अच्छेशास्त्रवेत्ताअपनीबुद्धिसे पारनहींपासक्ते तब मन्दबुद्धी जिनको कि केवल देशभाषाही पठनपाठन करनेकी सामर्थ्यहै वह कब इसके अन्तराभिप्रायको जानसक्तेहैं-और यह प्रत्यक्षहीहै कि जबतक किसी पुस्तक अथवा किसी वस्तुका अन्तराभिप्राय अच्छेप्रकार बुद्धिमें न भासितहो तबतक आनन्द क्योंकर मिलै इसकारण सम्पूर्ण भारतनिवासी भगवद्भक्तपादाब्जरसिकजनों के चित्तानन्दार्थ व बुद्धिबोधार्थ सन्तत धर्मधुरीण सकल कलाचातुरीण सर्व्वविद्याविलासी भगवद्भक्त्यनुरागी श्रीमन्मुन्शीनवलकिशोरजी सी,आई,ई ने बहुतसा धनव्ययकर फ़र्रुखाबाद निवासि स्वर्गवासि पण्डित उमादत्तजी से इस मनोरंजन वेदवेदान्तशास्त्रोपरि पुस्तक को श्रीशंकराचार्य्य निर्मित भाष्यानुसार संस्कृत से सरल देशभाषा में तिलकरचा नवलभाष्यआख्यसे प्रभातकालिक कमलसरिस प्रफुल्लित करादियाहै कि जिसको भाषामात्र के जाननेवाले पुरुषभी जानसक्ते हैं ॥

जब छपनेका समयआया तो बहुतसे विद्वज्जन महात्माओं की सम्मतिसे यह बिचारहुआ कि इस अमूल्य व अपूर्व ग्रन्थकी भाष्य में अधिकतरउत्तमता उससमय पर होगी कि इस शंकराचार्य्य कृत भाष्य भाषाके साथऔर इस ग्रन्थ के टीकाकारों की टीकाभी जितनी मिलें शामिल कीजावें जिसमें उन टीकाकारों के अभिप्रायकाभी बोधहोवे इसकारण से श्रीस्वामी शंकराचार्य्यजीकी शंकरभाष्यका तिलक व श्रीआनन्दगिरिकृत तिलक श्रीधरस्वामिकृत तिलकभी मूल श्लोकों सहितइस पुस्तक में उपस्थित है ॥